THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

निग्गंथं पावयणं

018234

आयारो

तह

आयार-चूला

(मूल-पाठ, पाठान्तर, शब्द-सूची आदि)

वाचना प्रमुख

आचार्य तुलसी

सम्पादक

मुनि नथमल

(निकाय-सचिव)

प्रकाशक

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट

कलकत्ता-१

प्रबन्ध-सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया, बी० कॉम०, बी० एल०

संकलक :
आदर्श साहित्य संघ
चूरू (राजस्थान)

आर्थिक-सहायक :
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

दिसम्बर, १९६७
प्रति-संख्या
१०००

पृष्ठांक :
६३२

मुद्रक :
न्यू रोशन प्रिण्टिंग वर्क्स
३१/१, लोअर चितपुर रोड
कलकत्ता-१

मूल्य : रु० १३)

AYARO
Taha
AYAR-CULA

[THE ACARANGA AND THE ACARANGA-CULA]

Vacana Pramukha
ACARYA TULASI

Edited with

Original text, Variant readings, Alphabetical index of words, Appendices, etc.

Editor
Muni Nathmal
(Nikaya Saciva)

Publisher
Jain Swetambar Terapanthi Mahasabha
(Agam-Sahitya Prakashan Samiti)
3, Portuguese Church Street
CALCUTTA-1 (INDIA)

First Edition 1967] **[Price : Rs. 13**

शेष पाँच उद्देशको में भी प्राप्त होते है। पाठ-संशोधन में प्रयुक्त आदर्शों तथा आचारांग वृत्ति में यह प्राप्त नही है। आचारांग चूर्णि में 'लज्जमाणा पुढोपास' (आयारो, सूत्र १६, पृ० ४) सूत्र से लेकर 'अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए' (आयारो, सूत्र २६, पृ० ६) तक ध्रुवकण्डिका (एक समान पाठ) मानी गई है।[1]

चूर्णि में प्राप्त संकेत के आधार पर हमने द्वितीय उद्देशक में प्राप्त तीन सूत्र (२७-२९) शेष पाँचो उद्देशको में स्वीकृत किए है।

आठवे अध्ययन के दूसरे उद्देशक (सू० २१) की चूर्णि[2] में 'कुंभारायतणंसि वा' के स्थान पर अनेक शब्द उपलब्ध होते हैं, जैसे—'उवट्टणगिहे वा, गामदेउलिए वा, कम्मगारसालाए वा, तंतुवायगसालाए वा, लोहगारसालाए वा।' चूर्णिकार ने आगे लिखा है—'जच्चियाओ साला सव्वाओ भाणियव्वाओ।'[3]

यहाँ प्रतीत होता है कि 'कुभारायतणंसि वा' शब्द अन्य अनेक शाला या गृहवाची शब्दो से युक्त था, किन्तु लिपि-दोष के कारण कालक्रम से शेष शब्द छूट गए। चूर्णि के आधार पर पाठ-पद्धति का निश्चय करना संभव नही, इसलिए उसे मूलपाठ मे स्वीकृत नही किया गया।

हमने संक्षिप्त पाठ की पूर्ति भी की है। पाठ संक्षेप की परम्परा श्रुत को कंठाग्र करने की पद्धति और लिपि की सुविधा के कारण प्रचलित हुई। पं० बेचरदास दोशी ने ८-१२-६६ को आचार्यश्री तुलसी के पास एक लेख भेजा था। उसमें इस विषय पर प्रकाश डालते हुए उन्होने लिखा है—"प्राचीन जैन-श्रमण लिखने-लिखाने की प्रवृत्ति को आरंभ-रूप समझते थे, फिर भी शास्त्रों की रक्षा के लिए उन्होने लिखने-लिखाने के आरम्भ-रूप मार्ग को भी अपवाद समझ कर स्वीकार किया। पर जितना कम लिखना पडे उतना अच्छा, ऐसा समझ कर उन्होंने शास्त्र की रक्षा के लिए ही, हो सके वहाँ तक कम आरंभ करना पडे, ऐसा रास्ता शोधने का जरूर प्रयास किया। इस रास्ते की शोध से 'वण्णओ' और 'जाव' दो नए शब्द उनको मिले। इन दो शब्दो की सहायता से हजारो श्लोक वा सैकडो वाक्य कम लिखने से उनका आरंभ कम हो गया और शास्त्र के आशय में भी किसी प्रकार की न्यूनता नही हुई।"

---

१. देखे—आयारो, पृ० ८ पादटिप्पण सख्याक २; पृ० ११ पादटिप्पण सख्याक २; पृ० १४ पादटिप्पण सख्याक १, पृ० १६ पादटिप्पण सख्याक ३, पृ० १९ पादटिप्पण सख्याक ४।

२. आचारांग चूर्णि, पृ० २६०-२६१।

३. वही, पृ० २६१।

श्रुत को कण्ठस्थ करने की पद्धति, लिपि की सुविधा और कम लिखने की मनोवृत्ति—पाठ-संक्षेप के ये तीनों कारण संभाव्य है। इनसे भले ही आशय की न्यूनता न हुई हो, किन्तु ग्रन्थ-सौन्दर्य अवश्य न्यून हुआ है। पाठक की कठिनाइयाँ भी बढ़ी है। जिन मुनियों के समग्र आगम-साहित्य कण्ठस्थ था, वे 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा संकेतित पाठ का अनुसंधान कर पूर्वापर की सम्बन्ध-योजना कर सकते हैं। किन्तु प्रतिलिपियों के आधार पर पढ़ने वाला मुनि-वर्ग ऐसा नहीं कर सकता। उसके लिए 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा संकेतित पाठ बहुत लाभदायी सिद्ध नहीं हुआ है। इसका हम प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे है। इसी कठिनाई तथा ग्रन्थ-सौन्दर्य की दृष्टि से हमारे वाचना प्रमुख आचार्यश्री तुलसी ने चाहा की संक्षेपीकृत पाठ की पुनः पूर्ति की जाए। हमने अधिकाश स्थलो में संक्षिप्त पाठ की पूर्ति की है। उसकी सूचना के लिए बिन्दु-संकेत दिया गया है। आयारो तथा आयार-चूला के पूर्ति-स्थलो के निर्देश की सूचना प्रथम और द्वितीय परिशिष्ट में दी गई है।

पं० बेचरदास दोशी के अनुसार पाठ का संक्षेपीकरण देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने किया था। उन्होंने लिखा है—"देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने आगमो को ग्रन्थ-बद्ध करते समय कुछ महत्त्वपूर्ण बाते ध्यान मे रखी। जहाँ-जहाँ शास्त्रो मे समान पाठ आए वहाँ-वहाँ उनकी पुनरावृत्ति न करते हुए उनके लिए एक विशेष ग्रन्थ अथवा स्थान का निर्देश कर दिया। जैसे—'जहा उववाइए' 'जहा पण्णवणाए' इत्यादि। एक ही ग्रन्थ मे वही बात बार-बार आने पर उसे पुनः-पुनः न लिखते हुए 'जाव' शब्द का प्रयोग करते हुए उसका अन्तिम शब्द लिख दिया। जैसे—'णाग कुमारा जाव विहरंति', 'तेणं कालेणं जाव परिसा णिग्गया' इत्यादि।"[1]

इस परम्परा का प्रारम्भ भले ही देवर्द्धिगणि ने किया हो, किन्तु इसका विकास उनके उत्तरवर्ती-काल मे भी होता रहा है। वर्तमान मे उपलब्ध आदर्शों मे संक्षेपीकृत पाठ की एकरूपता नहीं है। एक आदर्श में कोई सूत्र संक्षिप्त है तो दूसरे मे वह समग्र रूप से लिखित है। टीकाकारो ने स्थान-स्थान पर इसका उल्लेख भी किया है। उदाहरण के लिए औपपातिक सूत्र में "अयपायाणि वा जाव अण्णयराइं वा" तथा 'अयबंधणाणि वा जाव अण्णयराइं वा'—ये दो पाठाश मिलते है। वृत्तिकार के सामने जो मुख्य आदर्श थे, उनमे ये दोनो संक्षिप्त रूप में थे, किन्तु दूसरे आदर्शों में ये समग्र रूप मे भी प्राप्त थे। वृत्तिकार ने इसका उल्लेख किया है।[2] लिपिकर्त्ता

१. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, पृ० ८१।
२ ओपपातिक वृत्ति, पत्र १७७
पुस्तकान्तरे समग्रमिद सूत्रद्वयमस्त्येवेति।

भगवान् पार्श्व के साढे तीन सौ चतुर्दश-पूर्वी मुनि थे।[1]
भगवान् महावीर के तीन सौ चतुर्दश-पूर्वी मुनि थे।[2]

समवायाग और अनुयोगद्वार में अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य का विभाग नही है। सर्व प्रथम यह विभाग नन्दी में मिलता है। अङ्ग-बाह्य की रचना अर्वाचीन स्थविरो ने की है। नन्दी की रचना से पूर्व अनेक अङ्ग-बाह्य ग्रन्थ रचे जा चुके थे और वे चतुर्दश-पूर्वी या दश-पूर्वी स्थविरो द्वारा रचे गए थे। इसलिए उन्हे आगम की कोटि में रखा गया। उसके फलस्वरूप ([illegible] —(१) अङ्ग-प्रविष्ट और (२) अङ्ग-बाह्य। यह विभाग [illegible] तक नही हुआ था। यह सबसे पहले नन्दी (वीर-[illegible]

नन्दी की रचना तक आगम के तीन वर्गीकरण हो जात [illegible]—(१) [illegible] प्रविष्ट और (३) अङ्ग-बाह्य। आज 'अङ्ग-प्रविष्ट' और 'अङ्ग-बाह्य' उपलब्ध होते है, किन्तु पूर्व उपलब्ध नहीं है। उनकी अनुपलब्धि ऐतिहासिक दृष्टि से विमर्शनीय है।

२-पूर्व

जैन-परम्परा के अनुसार श्रुत-ज्ञान (शाब्द-ज्ञान) का अक्षयकोष 'पूर्व' है। इसके अर्थ और रचना के विषय में सब एकमत नही हैं। प्राचीन आचार्यों के मतानुसार 'पूर्व' द्वादशांगी से पहले रचे गए थे, इसलिए इनका नाम 'पूर्व' रखा गया।[3] आधुनिक विद्वानो का अभिमत यह है कि 'पूर्व' भगवान् पार्श्व की परम्परा की श्रुत-राशि है। यह भगवान् महावीर से पूर्ववर्ती है, इसलिए इसे 'पूर्व' कहा गया है।[4] दोनों अभिमतों में से किसी को भी मान्य किया जाए, किन्तु इस फलित में कोई अन्तर नही आता कि पूर्वों की रचना द्वादशांगी से पहले हुई थी या द्वादशागी पूर्वों की उत्तरकालीन रचना है।

वर्तमान में जो द्वादशांगी का रूप प्राप्त है, उसमें 'पूर्व' समाए हुए है। बारहवॉ अङ्ग

---

१. समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सू० १४।
२. वही, सू० १२।
३. समवायांग वृत्ति, पत्र १०१ :
प्रथमं पूर्वं तस्य सर्वप्रवचनात् पूर्वं क्रियमाणत्वात्।
४. नन्दी, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २४० :
अन्ये तु व्याचक्षते पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थं मर्हन् भाषते, गणधरा अपि पूर्वं पूर्वगतसूत्रं विरचयन्ति, पश्चादाचारादिकम्।

दृष्टिवाद है। उसका एक विभाग है पूर्वगत। चौदह पूर्व इसी 'पूर्व' के अन्तर्गत किए गए है। भगवान् महावीर ने प्रारम्भ में पूर्वगत का अर्थ 'प्रतिपादित' किया था और गौतम आदि गणधरो ने भी प्रारम्भ में पूर्वगत-श्रुत की रचना की थी। इस अभिमत से यह फलित होता है कि चौदह पूर्व और बारहवाँ अङ्ग—ये दोनो भिन्न नही है। पूर्वगत-श्रुत बहुत गहन था। सर्व साधारण के लिए वह सुलभ नही था। अङ्गो की रचना अल्पमेधा व्यक्तियो के लिए की गई। जिनभद्र गणि क्षमाश्रमण ने बताया है कि 'दृष्टिवाद मे समस्त शब्द-ज्ञान का अवतार हो जाता है। फिर भी ग्यारह अङ्गो की रचना अल्पमेधा पुरुषो तथा स्त्रियो के लिए की गई।[1] ग्यारह अङ्गो को वे ही साधु पढ़ते थे, जिनकी प्रतिभा प्रखर नही होती थी। प्रतिभा सम्पन्न मुनि पूर्वों का अध्ययन करते थे। आगम-विच्छेद के क्रम से भी यही फलित होता है कि ग्यारह अङ्ग दृष्टिवाद या पूर्वों से सरल या भिन्न-क्रम मे रहे है। दिगम्बर-परम्परा के अनुसार वीर-निर्वाण के बासठ वर्ष बाद केवली नही रहे। उसके बाद सौ वर्ष तक श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) रहे। उसके पश्चात् एक सौ तिरासी वर्ष तक दशपूर्वी रहे। इनके पश्चात् दो सौ बीस वर्ष तक ग्यारह अङ्गधर रहे।[2]

उक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि जब तक आचार आदि अङ्गो की रचना नही हुई थी, तब तक महावीर की श्रुत-राशि 'चौदह पूर्व' या 'दृष्टिवाद' के नाम से अभिहित होती थी और जब आचार आदि ग्यारह अङ्गो की रचना हो गई, तब दृष्टिवाद को बारहवे अङ्ग के रूप में स्थापित किया गया।

यद्यपि बारह अङ्गो को पढ़ने वाले और चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले—ये भिन्न-भिन्न उल्लेख मिलते है,[3] फिर भी यह नही कहा जा सकता कि चौदह पूर्वों के अध्येता बारह अङ्गो के अध्येता नही थे और बारह अङ्गो के अध्येता चतुर्दश-पूर्वी नहीं थे। गौतम स्वामी को 'द्वादशांगवित्' कहा गया है।[4] वे चतुर्दश-पूर्वी और अङ्गधर दोनो थे। यह कहने का प्रकार-भेद रहा है कि श्रुत-केवली को कहीं 'द्वादशागवित्' और कही 'चतुर्दश-पूर्वी' कहा गया।

ग्यारह अङ्ग पूर्वों से उद्धृत या संकलित हैं। इसलिए जो चतुर्दश-पूर्वी होता है,

---

१. विशेषावश्यक भाष्य, गाथा ५५४ :
जइवि य भूतावाए, सव्वस्स वओगयस्स ओयारो।
निज्जूहणा तहावि हु, दुम्मेहे पप्प इत्थी य॥

२. जयधवला, प्रस्तावना पृ० ४९।

३. देखिए—भूमिका का प्रारम्भिक भाग।

४. उत्तराध्ययन, २३।७।

है। आचारांग में निर्वाण को 'अनन्य-परम' कहा गया है। वहाँ सब उपाधियाँ समाप्त हो जाती हैं, इसलिए उससे अन्य कोई परम नहीं है। निर्वाण के उपायभूत सम्यग्-दर्शन, सम्यग्-ज्ञान और सम्यग्-चारित्र का स्थान-स्थान पर प्रतिपादन हुआ है। इन दृष्टियों से आचारांग को जैन-दर्शन का आधारभूत ग्रन्थ कहा जा सकता है।

श्रद्धा और स्वतंत्र-दृष्टि

आचारांग श्रद्धा का समुद्र है। 'सिड्ढी आणाए मेहावी'[1], 'आणाए मामगं धम्मं'[2] आदि वाक्यों में अपने आराध्य के प्रति आत्मार्पण की भावना प्रस्फुटित होती है। आचाराग की श्रद्धा में स्वतंत्र-दृष्टिकोण का स्थान असुरक्षित नही है। सत्य की उपलब्धि के तीन साधन बतलाए गए हैं—

१—सहसम्मति,

२—परव्याकरण और

३—श्रुतानुश्रुत[3]।

इन तीन साधनों मे पहला साधन है—अपनी बुद्धि के द्वारा सत्य का अवबोध करना। 'मइमं पास'[4]—इस शब्द का प्रयोग भी दृष्टि की स्वतंत्रता को अवकाश देता है। वृत्तिकार ने इसका अर्थ किया है 'न केवलं अहमेव कथयामि त्वमेव पश्य'—केवल मैं ही नही करता हूँ, तू स्वयं भी देख। इस प्रकार आचारांग में श्रद्धा और स्वतंत्र-दृष्टि का सुन्दर संगम हुआ है। केवल श्रद्धा और केवल स्वतंत्र-दृष्टि—ये दोनों अतियाँ हैं। इनसे अच्छे परिणाम की उपलब्धि नही हो सकती। श्रद्धा और स्वतंत्र-दृष्टि का समन्वय ही सत्य-संधान का समुचित मार्ग है।

कषोपल

आचारांग सबसे प्राचीन सूत्र है, इसलिए यह उत्तरवर्ती सूत्रों के लिए 'कषोपल' के समान है। इसमे वर्णित आचार मूलभूत हैं। वे भगवान् महावीर के मौलिक आचार के सर्वाधिक निकट हैं। उत्तरवर्ती सूत्रों में वर्णित आचार उसका परिवर्धन या विकास है। आचारांग-चूला में भी आचार का परिवर्धन या विकास हुआ है। जो तथ्य मूल आचारांग में नही हैं, वे आचार-चूला में प्राप्त होते हैं, तब सहज ही प्रश्न खड़ा

१. आचारांग, ३।८०।

२. वही, ६।४८।

३. वही, १।३ :
सह-सम्मइयाए, पर-वागरणेण, अण्णेसि वा अंतिए सोच्चा।

४. वही, ३।१२।

होता है कि उनका आधार क्या है? दो शताब्दी से-पूर्ववर्ती साहित्य में जो तथ्य नही है, वे दो शताब्दी बाद लिखे गए साहित्य में कहाँ से आए? इसका समाधान देने के लिए हमारे पास पर्याप्त साधन सामग्री नहीं है, फिर भी इस विषय मे इतना कहा जा सकता है कि सामयिक परिस्थितियो को ध्यान में रख कर वर्तमान आचार्यों ने उत्सर्ग और अपवाद के सिद्धान्त की स्थापना और उसके आधार पर विधि-विधानो का निर्माण किया था। आचार-चूला उसी शृङ्खला की प्रथम कडी है। जैन-आचार की समीक्षा करते समय इस तथ्य की विस्मृति नहीं होनी चाहिए कि आचाराग मे वर्णित आचार मौलिक है और महावीर-कालीन है तथा जो आचार आचारांग मे वर्णित नही है, वह उत्तरवर्ती है तथा उसकी प्रारम्भ-तिथि अन्वेषणीय है।

समसामयिक विचार

आचारांग में वैदिक, औपनिषदिक और बौद्ध विचारधाराओ के संदर्भ में अनेक तथ्यो का प्रतिपादन हुआ है। वैदिक-साधना को हम अरण्य-साधना कह सकते है। वैदिक-धारणा के अनुसार धर्म की साधना के लिए मनुष्य को अरण्य मे रहना आवश्यक है। वैदिक ऋषि तत्त्वचिन्ता के लिए भी अरण्य मे रहते थे। आरण्यक-साहित्य उसी अरण्यवास की निष्पत्ति है। भगवान् महावीर ने अरण्यवास की अनिवार्यता मान्य नहीं की। उन्होने कहा—"साधना गाँव में भी हो सकती है और अरण्य में भी हो सकती है।"[1]

"धर्म का उपदेश जैसे बडे लोगो को दिया जा सकता है, वैसे ही छोटे लोगो को दिया जा सकता है।"[2] उच्च-वर्ग को ही धर्म सुनने का अधिकार है, शूद्र को धर्म सुनने का अधिकार नही है, इस सिद्धान्त के प्रतिवाद मे ही भगवान् महावीर ने उक्त विचार का प्रतिपादन किया था।

"न कोई व्यक्ति हीन है और न कोई व्यक्ति उच्च है"[3]—इस विचार का प्रतिपादन जातिवाद के विरुद्ध किया गया था।

इस प्रकार उपनिषद्, गीता और बौद्ध-साहित्य के संदर्भ मे आचाराग का तुलनात्मक अध्ययन करने पर विचारधारा के अनेक मौलिक स्रोत हमें प्राप्त हो सकते हैं।

---

१. आचाराग, ८।१४
गामे वा अदुवा रण्णे, 'धम्ममायाणह—पवेदित माहणेण मईमया।

२ वही, २।१७४
जहा पुण्णस्स कत्थइ, तहा तुच्छस्स कत्थइ।
जहा तुच्छस्स कत्थइ, तहा पुण्णस्स कत्थइ॥

३. वही, २।४९
णो हीणे, णो अइरित्ते।

परिशिष्ट पर्व

पाणिनीय शिक्षा

प्रभावक चरित

प्रशमरति प्रकरण

प्राकृत साहित्य का इतिहास

मूलाराधना

विशेषावश्यक भाष्य

व्यवहार भाष्य

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र (डॉ० नलिनाक्ष दत्त का देवनागरी संस्करण, रायल एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता, सन् १९५३)

सम्मति तर्क प्रकरण

समवायांग (संशोधित प्रति)

समवायांग वृत्ति

सर्वार्थसिद्धि

सूत्रकृतांग चूर्णि

सेक्रेड बुक्स ऑफ दी ईस्ट, दी खं० २२,४५

हिमवंत थेरावली

आयारो

तह

आयार-चूला

आयारो : विसय-सूची

१. सत्थ-परिण्णा	जीवसंयम-निरूवणं	पृ० १-२२
पढमो उद्देसो	जीवाणं अत्थित्थ-पदं	१
बीओ उद्देसो	पुढवीकाय-परूवणा-पद	३
तइओ उद्देसो	आउकाय-परूवणा-पदं	७
चउत्थो उद्देसो	तेउकाय-परूवणा-पदं	१०
पंचमो उद्देसो	वणस्सइकाय-परूवणा-पदं	१३
छट्ठो उद्देसो	तसकाय-परूवणा-पदं	१६
सत्तमो उद्देसो	वाउकाय-परूवणा-पद	१९
२. लोग-विजओ	सद्दादि विसयलोग-विजय-निरूवणं	२३-३८
पढमो उद्देसो	सयणासत्ति-निसेध-पदं	२३
बीओ उद्देसो	संजमदढत्त-पदं	२६
तइओ उद्देसो	माणवज्जण-अत्थनिस्सारता-पद	२८
चउत्थो उद्देसो	भोग-भोगी-अवाय-पदं	३१
पंचमो उद्देसो	लोगनिस्सा-पदं	३३
छट्ठो उद्देसो	लोगं पइ अममाइय-पदं	३६
३. सीओसणिज्जं	सुह-दुक्ख-तितिक्खा-निरूवणं	३९-४६
पढमो उद्देसो	सुत्त-जागरण-पदं	३९
बीओ उद्देसो	सुत्ताणं दुक्खाणुभव-पदं	४१
तइओ उद्देसो	'न दुक्खसहणमित्तेण समणो होइ' त्ति निरूवण-पदं	४३
चउत्थो उद्देसो	कसाय-पाव-विरइ-संजम-मोक्ख-पदं	४५
४. सम्मत्तं	सम्मत्त-निरूवणं	४७-५३
पढमो उद्देसो	सम्मावाय-पदं—सम्मदंसण-पदं	४७
बीओ उद्देसो	धम्मप्पवाइय-परिक्खा-पदं—सम्मनाण-पदं	४८
तइओ उद्देसो	बालतवेण मोक्ख-निसेध-पदं—सम्मतव-पदं	५१
चउत्थो उद्देसो	समासवयणेण नियमण-पदं—सम्मचरित्त-पदं	५२

संकेत-निर्देशिका

•०	ये दोनो बिन्दु पाठ-पूर्ति के द्योतक है। पाठ-पूर्ति के प्रारम्भ में भरे बिन्दु (•) और उसके समापन में रिक्त बिन्दु (०) का संकेत किया गया है।
(?)	कोष्ठकवर्ती प्रश्न-चिन्ह आदर्शों मे अप्राप्त किन्तु पूर्व पद्धति के अनुसार आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें, पृष्ठ १७४, सूत्र १४
( )	क—पूर्व पद्धति के अनुसार आदर्शो मे प्राप्त किन्तु प्रस्तुत प्रकरण मे अनावश्यक पाठ को कोष्ठक मे रखा गया है। देखें, पृष्ठ १७१, सूत्र ५।
( )	ख—संग्रह गाथाएँ भी कोष्ठक के अन्तर्गत रखी गई है। देखे, पृष्ठ १५, सूत्र २४
( )	ग—तेरहवे और चौदहवे अध्ययन मे भेद करने वाले शब्द कोष्ठक मे रखे गए है।
( )	कोष्ठकवर्ती संख्यांक पूर्ति-आधार-स्थल के अध्ययन और सूत्रांक के सूचक है। देखे, पृष्ठ १६९, सूत्र ५१
(जाव २।३६)	कोष्ठक में जाव के आगे जो सूत्रांक है, वे पूर्ति-आधार-स्थल के अध्ययन और सूत्रांक के सूचक है। देखे, पृष्ठ १८४, सूत्र ३७
(जाव)	एक ही सूत्र मे समान पाठ-पद्धति के सूचक जाव शब्दो में से एक की पूर्ति की गई है तथा पुनरागत जाव शब्द के लिए कोष्ठक का प्रयोग किया गया है। देखें, पृष्ठ १६७, सूत्र १४४।
' '	यह दो या उससे अधिक शब्दो के स्थान पर पाठान्तर होने का सूचक है। देखे, पृष्ठ १, सू० २८। गहरे अक्षर पद्य-भाग के सूचक है। देखें, पृष्ठ ७, सूत्र ३५
०	पाठ के संलग्न दिया गया एक बिन्दु अपूर्ण पाठ का द्योतक है।
×	क्रास पाठ नही होने का द्योतक है।
वृपा०	वृत्ति सम्मत पाठान्तर।
चूपा०	चूर्णि सम्मत पाठान्तर।
असण वा ४ असण वा (४)	असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा

आयारो

९९—लज्जमाणा पुढो पास[1] ।

१००—अणगारा मो'त्ति एगे पवयमाणा ।

१०१—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे[2] पाणे विहिंसति ।

१०२—तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता ।

१०३—इमस्स चेव जीवियस्स—
परिवंदण-माणण-पूयणाए,
जाती-मरण-मोयणाए,
दुक्ख-पडिघायहेउं ।

१०४—से सयमेव वणस्सइ-सत्थं समारंभइ, अण्णेहि वा वणस्सइ-सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे समणुजाणइ ।

१०५—तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

१०६—से तं संबुज्झमाणे,
आयाणीयं समुट्ठाए ।

१०७—सोच्चा भगवओ, अणगाराण वा अंतिए इहमेगेसिं णायं भवति—
एस खलु गंथे,
एस खलु मोहे,
एस खलु मारे,
एस खलु णिरए ।

१—धुंव गडिया (चू) ।
२—अणेग ° (ख, ग, च) ।

१०८–इच्चत्थं गढिए लोए।

१०९–जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं वणस्सइ-सत्थं समारंभेमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिसति[1]।

११०–से बेमि—

अप्पेगे अधमब्भे, अप्पेगे अधमच्छे।

१११–अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे। (१।२८)

११२–अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए।

११३–से बेमि—

इमपि जाइ-धम्मय,	एयपि जाइ-धम्मय।
इमपि बुड्ढि-धम्मय,	एयंपि वुड्ढि-धम्मयं।
इमंपि चित्तमतयं,	एयंपि चित्तमतयं।
इमपि छिन्न मिलाति,	एयंपि छिन्न मिलाति।
इमपि आहारग,	एयपि आहारगं।
इमंपि अणिच्चयं,	एयंपि अणिच्चयं।
इमंपि असासय,	एयंपि असासयं।
इमपि चयावचइयं,	एयंपि चयावचइयं,[2]।
इमंपि विपरिणामधम्मयं,	एयंपि विपरिणामधम्मयं।

११४–एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाता भवंति।

११५–एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति।

१–विहमति (ख, ग)। अशुद्ध प्रतिभाति।

२–चओवचइय (चू, क, घ, च, छ), चयावचय (ख, ग)।

६६—से तत्थ गढिए चिट्ठइ भोयणाए ।

६७—तओ से एगया विपरिसिट्ठं[1] संभूयं महोवगरणं भवइ ।

६८—तं पि से एगया दायाया विभयंति,
अदत्तहारो[2] वा से अवहरति,[3]
रायाणो वा से विलुंपंति,
णस्सति वा से, विणस्सति वा से,
अगार-दाहेण वा से डज्झइ ।

६९—इति से परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे,
तेण दुक्खेण मूढे[4] विप्परियासु'वेइ[5] ।

७०—मुणिणा हु एयं पवेइयं ।

७१—अणोहंतरा एते, नो य ओहं तरित्तए ।
अतीरंगमा एते, नो य तीरं गमित्तए ।
अपारंगमा एते, नो य पारं गमित्तए ॥

७२—आयाणिज्जं च आयाय, तम्मि ठाणे ण चिट्ठइ ।
वितहं पप्प'ऽखेयन्ने, तम्मि ठाणम्मि चिट्ठइ ॥

७३—उद्देसो पासगस्स णत्थि ।

७४—बाले पुण णिहे काम-समणुन्ने असमिय-दुक्खे दुक्खी
दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ ।

—त्ति बेमि ।

१—विविह परिसिट्ठं (क, ख, ग, घ, च) ।
२—अदत्ताहारा (ख, ग) ।
३—अवहर ति (ख, ग) ।
४—समूढे (क, घ) ।
५—विप्परियासमुवेति (ख, ग, घ, च, छ) ।

चउत्थो उद्देसो

७५–तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ।

७६–जेहिं वा सद्धिं सवसति ते वा णं एगया णियया पुव्विं परिवयंति,
सो वा ते णियगे पच्छा परिवएज्जा ।

७७–नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।
तुमंपि तेसि नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।

७८–जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सायं ।

७९–भोगामेव अणुसोयंति ।

८०–इहमेगेसिं माणवाणं ।

८१–तिविहेण जावि से तत्थ मत्ता भवइ–अप्पा वा बहुगा वा ।

८२–से तत्थ गढिए चिट्ठति, भोयणाए ।

८३–ततो से एगया विपरिसिट्ठ संभूयं महोवगरणं भवति ।

८४–तं पि से एगया दायाया विभयंति,
अदत्तहारो वा से अवहरति,[1]
रायाणो वा से विलुंपंति,
णस्सइ वा से, विणस्सइ वा से,
अगार-डाहेण वा डज्झइ ।

८५–इति से बाले परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं पकुव्वमाणे,
तेण दुक्खेण मूढे[2] विप्परियासु'वेइ ।

१–हरति (क, छ) ।
२–समूढे (क, घ, च) ।

५—तं आइत्तु[1] ण णिहे ण णिक्खिवे, जाणित्तु धम्मं जहा[2] तहा।

६—दिट्ठेहिं णिव्वेयं गच्छेज्जा।

७—णो लोगस्सेसणं चरे।

८—जस्स णत्थि इमा णाई, अन्ना तस्स कओ[3] सिया?

९—दिट्ठं सुयं मयं विन्नायं, जमेयं[4] परिकहिज्जइ।

१०—समेमाणा पलेमाणा[5], पुणो-पुणो जातिं पकप्पेंति।

११—अहो य राओ य[6] 'जयमाणे, वीर[7]'[8] सया आगय-पन्नाणे।
पमत्ते बहिया पास, अप्पमत्ते सया परक्कमेज्जासि।

—त्ति बेमि।

बीओ उद्देसो

१२—जे आसवा, ते परिस्सवा,
जे परिस्सवा, ते आसवा,
जे अणासवा, ते अपरिस्सवा,
जे अपरिस्सवा, ते अणासवा —
एए पए संबुज्झमाणे, लोयं च आणाए अभिसमेच्चा पुढो पवेइयं।

१३—आघाइ° णाणी इह माणवाणं,
संसार-पडिवन्नाणं संबुज्झमाणाणं विन्नाणं-पत्ताणं।

१—आइत्तु (ख,ग,च,छ,वृ)।
२—अहा (घ)।
३—कुतो (च)।
४—ज लोए (चू)।
५—पालेमाणा (क, च), चलेमाणा (शु०)।
६—× (ख,ग,छ)।
७—धीरे (ख,ग,घ,वृ)।
८—जताहि एव वीरे (चू)।
९—अक्खाइ (घ); नागार्जुनीया —आघाइ धम्म खलु से जीवाण, तजहा—संसारपडिवन्नाण मणुस्सवभत्थाण आरंभविणईण दुक्खुव्वेअसुहेसगाणं धम्म-सवणगवेसगा - निक्खित्त-सत्थाणं सूरसूसमाणाण पडिपुच्छमाणाण विन्नाणपत्ताणं (च, व)।

१४–अट्टा वि सन्ता अदुवा पमत्ता ।

१५–अहासच्चमिणं ति बेमि ।

१६–नाणागमो मच्चु-मुहस्स अत्थि,
इच्छापणीया वंका-णिकेया ।
काल-ग्गहीआ णिचए णिविट्ठा,
'पुढो-पुढो जाइं पकप्पयंति'[1] ।

१७–'इहमेगेसिं तत्थ-तत्थ संथवो भवति ।
अहोववाइए फासे पडिसंवेदयंति ।

१८–चित्तं कूरेहिं कम्मेहिं, चित्तं परिचिट्ठति[2] ।
अचित्तं कूरेहिं कम्मेहिं, णो चित्तं परिचिट्ठति[3] ।'[4]

१९–एगे वयंति अदुवा वि णाणी,
णाणी वयंति अदुवा वि एगे ।

२०–आवंती केआवंती लोयंसि समणा य माहणा य पुढो
विवादं वदंति—
से दिट्ठं च णे, सुयं च णे,
मयं च णे, विण्णायं च णे—

१—पुढो पुढो जाइ पकरेति (चू) ,
एत्थ मोहे पुणो पुणो, पुढो पुढो जाइ पगप्पेति (चूपा) ;
" पकप्पेति (क) ; पकप्पन्ति (ख, ग, च) ; ' पकुप्पंति (च, छ) ।
'पुढो पुढो जाइ पकप्पयन्ति' पंक्तिस्थाने शुब्रिग सपादिते पुस्तके एतादृशं पाठान्तरम्—
एत्थ मोहे पुणो पुणो, इहमेगेसिं तत्थ तत्थ संथवो भवइ, अहोववाइए फासे पडिसवेययन्ति ;
चित्त कूरेहिं कम्मेहिं, चित्त परिविचिट्ठइ ,
अचित्तं कूरेहिं कम्मेहिं, नो चित्त परिविचिट्ठइ ।

२—परिविचिट्ठई (क, चू) ।

३—परिविचिट्ठई (क) ।

४—× (शु) ।

११५—सुपडिलेहिय[1] सव्वतो सव्वयाए[2] सम्ममेव[3] समभिजाणिया[4]।

११६—इहारामं परिण्णाय, अल्लीण-गुत्तो परिव्वए।
णिट्ठियट्ठी वीरे, आगमेण सदा परक्कमेज्जासि—त्ति बेमि।

११७—उड्ढं सोता अहे सोता, तिरियं सोता वियाहिया,
एते सोया वियक्खाया, जेहिं संगंति पासहा॥

११८—'आवट्टं तु उवेहाए'[5], 'एत्थ विरमेज्ज वेयवी'[6]।

११९—विणएत्तु[7] सोयं णिक्खम्म[8], एसमहं अकम्मा जाणति पासति।

१२०—पडिलेहाए णावकंखति, इह आगतिं परिण्णाय

१२१—अच्चेइ जाइ-मरणस्स वट्टमग्गं[9] वक्खाय-रए[10]।

१२२—सव्वे सरा णियट्टंति।

१२३—तक्का जत्थ ण विज्जइ।

१२४—मई तत्थ ण गाहिया।

१२५—ओए अप्पतिट्ठाणस्स खेयन्ने।

१२६—से ण दीहे, ण हस्से[11],
ण वट्टे, ण तंसे, ण चउरंसे, ण परिमण्डले।

१—°लेहिय (चू)।
२—सव्वत्ताए (चू). सर्वात्मना (वृ)।
३—°मेत (चू)।
४—°ज्जा (ध)।
५—आवट्टमेय तु पेहाए (ख, ग, घ), अट्टमेय उवेहाए (चू)।
६—विवेग किट्टइ वेदवी (चू, वृपा); एत्थ विरमेज्ज वेयवी (चूपा)।
७—विणएत्ता (चूपा)।
८—णिक्कम्म(म्मा) (घ, छ)।
९—वट्टमग्गं (क); वट्टुमग्गं (च, शु)।
१०—विक्खाय° (क, ख, ग, घ, च, छ)।
११—हुस्से (क, घ, च); रहस्से (ख); हरस्से (छ)।

१२७–ण किण्हे, न णीले, ण लोहिए, ण हालिद्दे, ण सुक्किल्ले ।

१२८–ण सुब्भिगंधे[1], ण दुरभिगंधे ।

१२९–ण तित्ते, ण कडुए, ण कसाए, ण अंबिले, ण महुरे ।

१३०–ण कक्खडे[2], ण मउए, ण गरुए, ण लहुए,
ण सीए, ण उण्हे, ण णिद्धे, ण लुक्खे ।

१३१–ण काऊ ।

१३२–ण रुहे ।

१३३–ण संगे ।

१३४–ण इत्थी, ण पुरिसे, ण अन्नहा ।

१३५–परिण्णे सण्णे[3] ।

१३६–उवमा ण विज्जए ।

१३७–अरूवी सत्ता ।

१३८–अपयस्स पयं णत्थि ।

१३९–से ण सद्दे, ण रूवे, ण गंधे, ण रसे, ण फासे, इच्चेताव ।

—त्ति बेमि ।

१—सुरहि (भि) (क, ख, ग) ।
२—कक्कडे (घ, छ) ।
३—सव्वओ (चू) ; × (घ) ।

१५–जामा तिण्णि उदाहिया[1], जेसु इमे आरिया[2] संबुज्झमाणा समुट्ठिया।

१६–जे णिव्वुया[3] पावेहिं कम्मेहिं, अणियाणा ते वियाहिया।

१७–उड्ढं अहं तिरियं दिसासु, सव्वतो सव्वावंति च णं पडियक्क[4] जीवेहिं[5] कम्म-समारभे णं।

१८–तं परिण्णाय मेहावी—णेव सयं एतेहिं काएहि दंडं समारंभेज्जा, णेव'ण्णेहिं एतेहि काएहि दंडं समारंभावेज्जा, ने'वन्ने एतेहिं काएहि दंडं समारंभंते वि समणुजाणेज्जा।

१९–जेवन्ने एतेहि काएहिं दंडं समारंभंति, तेसिं पि वयं लज्जामो।

२०–तं परिण्णाय मेहावी–तं वा दंडं, अण्णं वा दंडं, णो दंड-भी दंडं समारंभेज्जासि।

—त्ति बेमि।

बीओ उद्देसो

२१–से भिक्खू परक्कमेज्ज वा, चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा, तुयट्टेज्ज वा, सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरि-गुहंसि वा, रुक्ख-मूलसि वा, कुंभारायाणंसि वा, हुरत्था वा कहिं चि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती बूया—आउसंतो समणा! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय-

---

१—उदाहडा (घ, छ, चू). उदाहया (ख, ग)।
२—आयरिया (घ, छ)।
३—निव्वुडा (चू)।
४—पाडेक्क (क); पाडियक्क (घ, चू)।
५—दड समारभते (चू)।

पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं[1] अभिहडं आहट्टु[2] चेतेमि[3], आवसहं[4] वा समुस्सिणोमि ।

से भुंजह वसह ।

२२—आउसंतो समणा भिक्खू तं गाहावतिं समणसं सवयसं पडियाइक्खे—

आउसंतो गाहावती ! णो खलु ते वयणं आढामि, णो खलु ते वयणं परिजाणामि, जो तुमं मम अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएसि, आवसहं वा समुस्सिणासि ।

से विरतो आउसो गाहावती ! एयस्स अकरणाए ।

२३—से भिक्खू परक्कमेज्ज वा, ° चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा, तुयट्टेज्ज वा,

सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरि-गुहंसि वा, रुक्ख-मूलंसि वा, कुंभारायतणंसि वा °, हुरत्था वा कहिंचि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती आयगयाए पेहाए, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं,

---

१—° मिट्ठ (ख, ग, घ)।
२—आफुड (च)।
३—वेतेमि'त्ति केयि भणति करेमि, त तु ण युज्जति (चू)।
४—आवसघं (ख, ग). आवसथ (छ)।

१३–हरिएसु ण णिवज्जेज्जा, थंडिलं 'मुणिआ सए'[1] ।
विउसिज्ज[2] अणाहारो, पुट्ठो तत्थ हियासए ॥
१४–इंदिएहिं गिलायंते, समियं साहरे[3] मुणी ।
तहावि से अगरिहे[4], अचले जे समाहिए ॥
१५–अभिक्कमे पडिक्कमे, संकुचए पसारए ।
काय-साहारणट्ठाए[5], एत्थं[6] वावि अचेयणे ॥
१६–परिक्कमे परिकिलंते, अदुवा चिट्ठे अहायते ।
ठाणेण परिकिलंते, णिसिएज्जा य अंतसो ॥
१७–'आसीणे णेलिसं'[7] मरणं, इंदियाणि समीरए ।
कोलावासं समासज्ज, वितहं पाउरेसए ॥
१८–जओ वज्जं समुप्पज्जे, ण तत्थ अवलंबए ।
ततो उक्कसे[8] अप्पाणं, सव्वे फासेऽहियासए ॥
१९–अयं चायततरे[9] सिया, जो एवं अणुपालए ।
सव्व-गायणिरोधेवि, ठाणातो ण विउब्भमे ॥
२०–अयं से उत्तमे धम्मे, पुव्वट्ठाणस्स पग्गहे ।
अचिरं पडिलेहित्ता, विहरे चिट्ठ माहणे ॥

१—मुणि आसए (च, चू) ।
२—वियो° (ख, ग, च, छ) ।
३—आहरे (ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।
४—अगरहे (क, ख, ग, घ) ।
५—साहरण° (क, ग घ) ; सधारण (चू), सहारण (च) ।
६—इत्थ (घ) ।
७—आसीण मणेलिस (क, घ, च), उदासीणो अणे लिसो (चू) ।
८—उवक्कसे (ग, घ, छ) ।
९—चायतरे (ख), चाततरे (चू, क) ; आयरे द्रढग्गाहतरे धम्मे (चूपा) ; यदि वा०...आत्ततर. (वृ) ।

२१–अचित्तं तु समासज्ज, ठावए तत्थ अप्पगं ।
वोसिरे सव्वसो कायं, 'ण मे देहे परीसहा'[1] ॥
२२–जावज्जीवं परीसहा, उवसग्गा 'य संखाय'[2] ।
संवुडे देह-भेयाए, इति पण्णे हियासए ॥
२३–भेउरेसु न रज्जेज्जा, कामेसु बहुतरेसु[3] वि ।
इच्छा-लोभं[4] ण सेवेज्जा, सुहुमं[5] वन्नं सपेहिया ॥
२४–सासएहिं णिमंतेज्जा, 'दिव्वं मायं'[6] ण सद्दहे ।
तं पडिबुज्झ माहणे, सव्वं नूमं विधूणिया ॥
२५–सव्वट्ठेहिं[7] अमुच्छिए, आउ-कालस्स पारए ।
तितिक्खं परमं णच्चा, विमोहन्नतरं हितं ॥

—त्ति बेमि ।

१—न मे देह परीसहा, यदि वा—न मे देहे परीसहा (चू, वृ) ।
२—तिति संखाते (क) , इति सखया (ता) (ग, घ, छ) . इति संखाय (च, वृ) ।
३—बहुलेसु (चूपा, वृपा) ।
४—इच्छ° (क) ।
५—धुव (धुव°) (क, ख, ग, घ. च छ, चूपा वृपा) ।
६—दिव्वमाय (ख, घ, च) ।
७—सव्वत्थेहिं (चू) ।

३–जं च णो संचाएज्जा भोत्तए वा पायए वा, से[1] तमायाय एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता–
अहे झाम-थंडिलंसि वा, अट्ठि-रासिंसि वा, किट्ट[2]-रासिंसि वा, तुस-रासिंसि वा, गोमय-रासिंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि[3] पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव परिट्ठवेज्जा।

ओसहि-आदि-पदं

४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जाओ[4] पुण ओसहीओ जाणेज्जा–
कसिणाओ, सासिआओ, अविदल-कडाओ, अतिरिच्छ-च्छिन्नाओ, अव्वोच्छिन्नाओ, तरुणियं वा छिवाडिं, अणभिक्कंताऽभज्जियं[5] पेहाए–अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जाओ[6] पुण ओसहीओ जाणेज्जा–
अकसिणाओ, असासियाओ, विदल-कडाओ, तिरिच्छ-च्छिन्नाओ, वोच्छिण्णाओ, तरुणियं वा छिवाडिं, अभिक्कंतं भज्जियं पेहाए–फासुयं एसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा।

१–सेत्त° (अ, च, छ)।
२–किट्टि° (छ)।
३–थंडिल्ल (अ, छ)।
४–से जाओ (क, ग, छ)।
५–°क्कत भज्जियं (क, च); °क्कंतम भज्जियं (घ)।
६–से जाओ (क, ग, छ, व)। (अ, दुवृत्तौ भिमयंति)।

६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—
पिहुयं वा, बहुरजं वा, भुज्जियं[1] वा, मंथुं वा, चाउलं वा, चाउल-पलवं वा सइं भज्जियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ।

७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा •गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
पिहुयं वा, •बहुरजं वा, भुज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°, चाउल-पलंबं वा असइं भज्जियं, दुक्खुत्तो वा भज्जियं, तिक्खुत्तो वा भज्जियं—फासुयं एसणिज्जं •ति मन्नमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

अण्णउत्थिय-गारत्थिय-सद्धि-पदं

८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं •पिडवाय-पडियाए° पविसितुकामे, णो अन्नउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ[2] अपरिहारिएण वा[3], सद्धि गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।

९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमि वा, विहार-भूमिं वा, णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा—णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा, सद्धि—बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा—णिक्खमेज्ज[4] वा पविसेज्ज वा ।

१—भुजियं (क, घ, च, छ, व) , भज्जिय (अ) ।
२—परिहारिओ वा (अ, क, च, व) ।
३—× (अ, क, च, छ, व) ।
४—न प्रविशेत् नापि ततो निष्क्रामेत् (वृ) ।

णो तत्थ[1] बहवे समण-माहण*-अतिथि-किवण-वणीमगा उवागता° उवागमिस्संति, अप्पाइण्णावित्ती,
पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह[2]-धम्माणुओगचिंताए।
सेवं णच्चा तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडि संखडि-पडियाए अभिसंधारेज्ज गमणाए।

खीरिणी-गावी-पदं

४४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं *पिंडवाय-पडियाए° पविसिउकामे सेज्जं पुण जाणेज्जा—
खीरिणीओ[3] गावीओ खीरिज्जमाणीओ पेहाए;
असणं वा ४ उवसंखडिज्जमाणं[4] पेहाए,
पुरा अप्पजूहिए,
सेवं णच्चा णो गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा।
से त्त मायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा।

४५–अह पुण एवं जाणेज्जा—
खीरिणीओ गावीओ खीरियाओ पेहाए,
असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए,
पुरा पजूहिए,
से एवं णच्चा तओ संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा।

१–जत्थ (अ, क, च, छ, ब)।
२–° पेहाए (क, ब); पेहा (च)।
३–खीरिणियाओ (क, घ, च, छ, ब)।
४–उक्खडि° (अ, घ, क, छ, ब, चू)।

माइट्ठाण-पदं

४६–भिक्खागा णामेगे[1] एवमाहंसु–'समाणे वा, वसमाणे'[2] वा, गामाणुगामं दूइज्जमाणे–"खुड्डाए खलु अयं गामे, संणिरुद्धाए, णो महालए, से हंता! भयंतारो! बाहिरगाणि गामाणि भिक्खायरियाए[3] वयह।"

संति तत्थेगइयस्स भिक्खुस्स पुरे-संथुया वा, पच्छा-संथुया वा परिवसति, तं जहा—गाहावई वा, गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा, कम्मकरीओ वा,

तहप्पगाराइं कुलाइं पुरे-संथुयाणि वा, पच्छा-संथुयाणि वा, पुव्वामेव भिक्खायरियाए अणुपविसिस्सामि अविय इत्थ लभिस्सामि—पिंडं वा, लोयं वा, खीरं वा, दधिं वा, णवणीयं वा, घयं वा, गुलं वा, तेल्लं वा, महुं वा, मज्जं वा, मंसं वा, संकुलिं[4] वा, फाणियं वा, 'पूयं वा'[5], सिहरिणिं वा,

तं पुव्वामेव भोच्चा पेच्चा, पडिग्गहं सलिहिय संमज्जिय, तओ पच्छा भिक्खूहि सद्धिं गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिस्सामि, णिक्खमिस्सामि वा।

माइट्ठाणं संफासे, तं णो एवं करेज्जा।

१—°नाम मेगे (ब)।
२—समाणा वा वसमाणा (च)।
३—°पडियाए (घ, ब)।
४—सकुलिं (घ, छ), सक्कुलि (क्वचित्)।
५—× (घ, छ, वृ)।

९१—केवली बूया आयाण मेयं—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए मट्टिओलित्तं असणं वा४ उब्भिदमाणे पुढवीकायं समारंभेज्जा,

तह तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तस कायं समारंभेज्जा,

पुणरवि ओलिंपमाणे पच्छाकम्मं करेज्जा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एसुवएसे°,

जं तहप्पगारं मट्टिओलित्तं असणं वा४ •अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

पुढविकाय-पइट्ठिय-पदं

९२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु-°पविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा४ पुढविकाय-पइट्ठियं तहप्पगारं असणं वा४ •पुढविकाय-पइट्ठियं°—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

आउकाय-पइट्ठिय-पद

९३—•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा४ आउकाय-पइट्ठियं—

तहप्पगारं असणं वा४ आउकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

अगणिकाय-पइट्ठिय-पदं

९४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा४ अगणिकाय-पइट्ठियं—

तहप्पगारं असणं वा४ अगणिकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।०

९५—केवली बूया आयाण मेयं—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए अगणिं ओसक्किय[1], णिस्सक्किय[2], ओहरिय, आहट्टु दलएज्जा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एसुवएसे.

जं तहप्पगारं असणं वा ४ अगणिकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

अच्चुसिण-वीयण-पदं

९६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अच्चुसिणं,

अस्संजए भिक्खु-पडियाए सूवेण[3] वा, विहुवणेण[4] वा, तालियंटेण वा, 'पत्तेण वा'[5], साहाए वा, साहा-भंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा फुमेज्ज वा, वीएज्ज वा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा आउसो! त्ति वा, भगिणि! त्ति वा मा एयं तुमं असणं वा ४ अच्चुसिगं सूवेण वा, विहुवणेण वा, तालियटेण वा, पत्तेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा,

---

१—उस्सक्किय (क, घ, च) ; उस्सिक्किय (छ) ; ओसिक्किय (अ) ।

२—णिस्सिक्किय (अ, छ, व) ।

३—सुप्पेण (अ, च) ।

४—विहुयणेण (अ, क, घ, च) ।

५—× (घ, वृ) ।

अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

१३४—से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,० सेज्जं पुण जाणेज्जा—

बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं ।

अस्सिं खलु पडिगाहियंसि,

अप्पेसिया भोयण-जाएसु, बहुउज्झियधम्मिए ।

तहप्पगारं बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१३५—से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे० समाणे, सिया णं परो बहु-अट्ठिएण मंसेण[1] उवणिमंतेज्जा—

आउसंतो! समणा! अभिकंखसि बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्तए?

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म, से पुव्वामेव आलोएज्जा—

आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ से बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्तए,

अभिकंखसि मे दाउं जावइयं, तावइयं पोग्गलं दलयाहि, मा अट्ठियाइं ।

से सेवं वयंतस्स परो अभिहट्टु अंतो-पडिग्गहगंसि[2] बहु-अट्ठियं मंसं परिभाएत्ता[3] णिहट्टु दलएज्जा ।

१—मसेण मच्छेण (अ, ब, छ) ।

२—० पडिग्गहंसि (अ) ।

३—परिभोउत्ता (अ) ; परियाभोएत्ता (क, च) ।

तहप्पगारं पडिग्गहगं[1] परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—
अफासुयं अणेसणिज्जं •ति मण्णमाणे० लाभे संते •णो०
पडिगाहेज्जा ।
से आहच्च पडिगाहिए सिया, तं णोहि त्ति वएज्जा, णो
अणहित्ति[2] वएज्जा ।
से त्त मायाए एगंतमवक्कमेज्जा एगंतमवक्कमेत्ता, अहे
आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा, अप्पंडए •अप्प-पाणे
अप्प-बीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पु-त्तिग-पणग-दग-
मट्टिय-मक्कडा-० संताणए मंसगं मच्छगं[3] भोच्चा अट्ठियाइं
कंटए गहाय,
से त्त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, २ त्ता अहे झामथंडिलंसि
वा, •अट्ठि-रासिसि वा, किट्ट-रासिसि वा, तुस-रासिसि वा,
गोमय-रासिसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि
पडिलेहिय-पडिलेहिय,० पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजया मेव
परिट्ठवेज्जा ।

अजाणया लोण-दाण-पदं

१३६–से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे० समाणे,
सिया से परोअभिहट्टु अंतो-पडिग्गहए विलं वा लोणं,
उब्भियं वा लोणं परिभाएत्ता णीहट्टु दलएज्जा,
तहप्पगारं पडिग्गहगं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं
अणेसणिज्जं •ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।
से आहच्च पडिग्गाहिए सिया, तं च णाइदूरगए जाणेज्जा,

१—० ग्गहण (अ) ।
२—अणिहित्ति (छ) ।
३—× (घ) ।

से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, २ त्ता पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा 'इमं ते किं जाणया दिन्नं? उदाहु अजाणया[1]?'

सो य भणेज्जा—णो खलु मे जाणया दिन्नं, अजाणया।

कामं[2] खलु आउसो! इदाणिं णिसिरामि। तं भुंजह च णं, परिभाएह च णं।

तं परेहिं समणुन्नायं समणुसिट्ठं, तओ संजयामेव भुंजेज्ज वा, पीएज्ज वा।

जं च णो संचाएति भोत्तए वा, पायए वा। साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया तेसि अणुपदातव्वं।

सिया णो जत्थ साहम्मिया सिया, जहेव बहुपरियावन्ने कीरति, तहेव कायव्वं सिया।

१३७—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति बेमि।

एगारसमो उद्देसो

माइट्ठाण-पदं

१३८—भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु—समाणे वा, वसमाणे वा, गामाणुगामं 'वा दूइज्जमाणे'[3] मणुण्णं भोयण-जायं लभित्ता, से[4] भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह।

१—अजाणया दिन्न (घ)।
२—इमं (अ)।
३—दूइज्जमाणे वा (अ); दूइज्जमाणे (च, छ, ब)।
४—से य (अ)।

से य भिक्खू णो भुंजेज्जा । तुमं चेव णं भुंजेज्जासि ।
से एगइओ भोक्खामित्ति कट्टु पलिउंचिय-पलिउंचिय आलोएज्जा, तं जहा—इमे पिंडे, इमे[1] लोए[2], इमे तित्तए, इमे कडुयए, इमे कसाए, इमे अंबिले, इमे महुरे, णो खलु एत्तो किंचि गिलाणस्स सयति त्ति ।
माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।
तहाठियं[3] आलोएज्जा, जहाठियं[4] गिलाणस्स सदति—तं तित्तयं तित्तएत्ति वा, कडुयं कडुएत्ति वा, कसायं कसाएत्ति वा, अंबिलं अंबिलेत्ति वा, महुरं महुरेत्ति वा ।

मणुण्ण-भोयण-जाय-पदं

१३९—भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु—समाणे वा, वसमाणे वा, गामाणुगामं (वा ?) दूइज्जमाणे मणुन्नं भोयण-जायं लभित्ता से भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह ।
सेय भिक्खू णो भुंजेज्जा । आहरेज्जासि[5] णं ।
णो खलु मे[6] अतराए आहरिस्सामि । इच्चेयाइं[7] आयतणाइं उवाइकम्म ।

पिंडेसणा-पाणेसणा-पद

१४०—अह भिक्खू जाणेज्जा सत्त पिंडेसणाओ, सत्त पाणेसणाओ ।

१—× (क, च, छ) ।
२—लुक्खए (छ) ।
३—तहेव तं (अ, च, छ) ।
४—जहेव तं (अ, च, छ) ।
५—आहारेज्जासि (अ, घ, छ, ब) ; आहारेज्जा से (क च) ।
६—इमे (अ, क, च, छ, ब) ।
७—इच्चेइयाइ (क, छ, ब) ।

१४१–तत्थ खलु इमा पढमा पिंडेसणा–असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते। तहप्पगारेण असंसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण[1] वा, असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा–फासुयं •एसणिज्जं ति मणमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा–पढमा पिंडेसणा।

१४२–अहावरा दोच्चा पिडेसणा–संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते।

•तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, असणं वा ४ सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा–फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा—दोच्चा पिडेसणा।°

१४३–अहावरा तच्चा पिंडेसणा–इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति-गाहावई वा, •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरो वा,° कम्मकरीओ वा।

तेसिं च णं अण्णतरेसु विरूव-रूवेसु भायण-जाएसु उवणिक्खित्तपुव्वे सिया, तं जहा—

थालंसि वा, पिढरंसि[2] वा, सरगंसि वा, परगंसि वा, वरगंसि वा।

अह पुणेवं जाणेज्जा–असंसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, संसट्ठे वा हत्थे असंसट्ठे[3] मत्ते।

से य पडिग्गहधारी सिया पाणिपडिग्गहए[4] वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा–आउसो! त्ति वा भगिणि! ति वा एएगं तुमं

१–मत्तएण (अ, छ, ब)।
२–पिढरगसि (अ, च), पिठरगसि (घ), पिठरंसि (ब)।
३– ंसट्ठे वा (क, च)।
४–°पडिग्गहिए (छ, ब)।

असंसट्ठेण हत्थेण संसट्ठेण मत्तेण, संसट्ठेण वा हत्थेण असंसट्ठेण मत्तेण, अस्सि पडिग्गहगंसि वा पाणिंसि वा णिहट्टु उवित्तु दलयाहि ।

तहप्पगारं भोयण-जायं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा फासुयं एसणिज्जं •ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा—तच्चा पिंडेसणा ।

१४४–अहावरा चउत्था पिंडेसणा–से भिक्खू वा, •भिक्खुणी वा, गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,° सेज्जं पुण जाणेज्जा—

पिहुयं वा •बहुरजं वा, भुंजियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°; चाउल-पलंबं वा ।

अस्सि खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे अप्पे पज्जवजाए, तहप्पगारं पिहुयं वा [जाव] चाउल-पलंबं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा •—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—चउत्था पिंडेसणा ।

१४५–अहावरा पंचमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, उवहितमेव[1] भोयण-जायं जाणेज्जा, तं जहा—सरावंसि वा, डिंडिमंसि वा, कोसगंसि वा ।

अहपुण एवं जाणेज्जा—बहुपरियावन्ने पाणीसु दगलेवे ।

तहप्पगारं असणं वा ४ सयं वा णं जाएज्जा •परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—पंचमा पिंडेसणा ।

अहावरा छट्ठा पिंडेसणा— से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा

४—उग्गहिय° (घ)।

गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,° पग्गहियमेव[1] भोयण-जायं जाणेज्जा—

जं च सयट्ठाए पग्गहियं, जं च परट्ठाए पग्गहियं, तं पाय-परियावन्नं, तं पाणि-परियावण्णं—फासुयं •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—छट्ठा पिंडेसणा।

१४६–अहावरा सत्तमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, बहु-उज्झिय-धम्मियं भोयण-जायं जाणेज्जा—

जं चऽन्ने बहवे दुपय-चउप्पय-समण-माहण-अतिहि-किवण वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं-भोयण-जायं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा •—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—सत्तमा पिंडेसणा। इच्चेयाओ सत्त पिंडेसणाओ।

१४७–अहावराओ सत्त पाणेसणाओ। तत्थ खलु इमा पढमा पाणेसणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते—(१।१४१)।

१४८–•अहावरा दोच्चा पाणेसणा—संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते—(१।१४२)।

१४९–अहावरा तच्चा पाणेसणा—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति—(१।१४३)।

१५०–अहावरा चउत्था पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्ज पुण पाणग-जायं जाणेज्जा, तं जहा—तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा।

१—उग्गहिय° (अ, क, च); उग्गहित पग्गहित (चू)।

अस्सि खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे, अप्पे पज्जवजाए। तहप्पगारं तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुय एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा।

१५१–अहावरा पंचमा पाणेसणा— से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, उवहित-मेव पाणग-जायं जाणेज्जा—(१।१४५)।

१५२–अहावरा छट्ठा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, पग्गहिय-मेव पाणग-जायं जाणेज्जा—(१।१४६)।

१५३–अहावरा सत्तमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, वहु उज्झिय-धम्मियं पाणग-जाय जाणेज्जा—० (१।१४७)।

१५४–इच्चेयासिं सत्तण्हं पिंडसेणाणं, सत्तण्हं पाणेसणाणं अण्णतरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छापडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्म पडिवन्ने।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिम पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्नसमाहीए एवं च णं विहरंति।

१५५–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति वेमि।

बीयं अज्झयणं

सेज्जा

पढमो उद्देसो

उवस्सयएसणा-पदं

१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उवस्सयं एसित्तए[1], अणुपविसित्ता गामं वा, •णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा°, रायहाणिं वा,

सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

सअंडं •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-° संताणयं।

तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा।

२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अप्पंडं अप्पपाणं •अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-° संताणगं।

तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा।

अस्सिंपडियाए-उवस्सय-पदं

३—सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सिं पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, •(बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा° अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

४–•सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा–

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

५–सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

६–सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणोओ समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठ अभिहडं आहट्टु चेतेति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,

(बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।°

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-उवस्सय-पदं

७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स[1] पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं •समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चएइ ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा, अपुरिसंतरकडे वा (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा–
बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु° चेएइ ।
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे •(अबहिया णीहडे) अणत्तट्ठिए अपरिभुत्ते° अणासेविए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

९–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, •(बहिया णीहडे) अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१–समुद्दिस्स तं चेव भाणियव्वं (घ, च) ।

परिकम्मिय-उवस्सय-पदं

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंबिए[1] वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्टे वा, मट्ठे वा, संमट्ठे वा, संपधूमिए वा।
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, •(अबहिया णीहडे) अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

११—अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, •(बहिया णीहडे) अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा,
•महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा,
समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,
विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,
पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,
णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,
अंतो वा बहिं वा उवस्सयस्स हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, दालिय-दालिय।° संथारगं संथारेज्जा[2], बहिया वा णिण्णक्खु।[3]
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, •(अबहिया णीहडे) अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

१—उक्कंपिए (क, घ, च, ब)।
२—सथारेज्जा (अ, क, घ, च, ब)।
३—णिणक्खु (क, छ)।

१३–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, •(बहिया णीहडे) अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

बहिया निस्सारिय-उवस्सय-पदं

१४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा (तयाणि वा?)[1], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु।
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, •(अबहिया णीहडे) अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविते° णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

१५–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, •(बहिया णीहडे) अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा।

१६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खू-पडियाए पीढं वा, फलगं वा, णिस्सेणिं वा, उदूहलं वा ठाणाओ ठाणं साहरइ, बहिया वा णिण्णक्खु।
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, •(अबहिया णीहडे) अणत्तट्ठिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविए° णो ठाणं वा सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

१७–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे •(बहिया णीहडे) अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा।

१–यद्यप्ययमत्र प्रतिषु नोपलभ्यते, तथापि ३।३।५५ सूत्रमनुसृत्यासावऽत्र युज्यते।

अंतलिक्ख-जाय-उवस्सय-पदं

१८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
तंजहा—खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अन्नतरंसि वा तहप्पगारंसि वा अंतलिक्खजायंसि, णण्णत्थ आगाढाणागाढेहिं[1] कारणेहिं ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।
से य आहच्च चेतिते सिया, णो तत्थ सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा हत्थाणि वा, पादाणि वा, अच्छीणि वा, दंताणि वा, मुहं वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा।
णो तत्थ ऊसढं पगरेज्जा, तंजहा—उच्चारं वा, पासवणं वा, खेलं वा, सिंघाणं वा, वंतं वा, पित्तं वा, पूतिं वा, सोणियं वा, अन्नयरं वा सरीरावयवं।

१९–केवली बूया—आयाण मेयं। से तत्थ ऊसढं पगरेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा,
से तत्थ पयलमाणे[2] वा पवडमाणे[3] वा हत्थं वा, •पायं वा, बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा,° सीसं वा, अन्नतरं वा कायंसि इंदिय-जातं लूसेज्ज वा।
पाणाणि वा, भूयाणि वा, जीवाणि वा, सत्ताणि अभिहणेज्ज वा, •वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ° ववरोवेज्ज वा।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, •एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो,°

१–गाढा° (क, च, ब); आगाढावगाढेहिं (घ): आगाढादीहिं (छ)।
२–पयले° (क, च, छ)।
३–पवडे° (क, च, छ)।

जं तहप्पगारे उवस्सए अंतलिक्खजाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

सागारिय-उवस्सय-पदं

२०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा–
सइत्थियं, सखुड्डं, सपसुभत्तपाणं,
तहप्पगारे सागारिए[1] उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२१–आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावइ-कुलेण सद्धिं संवसमाणस्स अलसगे वा, विसूइया वा, छड्डी वा उव्वाहेज्जा,[2]
अन्नतरे वा से दुक्खे रोगातंके[3] समुप्पज्जेज्जा,
अस्संजए कलुण-पडियाए तं भिक्खुस्स गातं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा,
सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण[4] वा, वण्णेण वा, चुन्नेण वा, पउमेण वा, आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्टेज्ज वा,
सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा 'उच्छोलेज्ज वा'[5], पहोएज्ज वा, सिणावेज्ज वा, सिंचेज्ज वा,
दारुणा वा दारुपरिणामं[6] कट्टु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा,

१–साकारिए (छ, व)।
२–उप्पा° (क, च, व)।
३–रोगे आयके (घ)।
४–लोद्देण (अ, व)।
५–उच्छोलेज्ज पच्छोलेज्ज वा (व)।
६–दारुणं परि° (अ, च); दारुण° (क)।

पज्जालेज्ज वा, उज्जालेत्ता-पज्जालेत्ता कायं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो,

ज तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२२–आयाण मेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए संवसमाणस्स[1],

इह खलु गाहावई वा, •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा अन्नमन्नं अक्कोसंति वा, बंधंति[2] वा, रुंभंति वा, उद्दवेति[3] वा ।

अह भिक्खूणं उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अन्नमन्नं अक्कोसंतु वा मा वा अक्कोसंतु, बंधंतु, वा मा वा बंधंतु, रुंभंतु वा मा वा रुंभंतु, उद्दवेतु वा मा वा उद्दवेतु ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, •एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२३–आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहि सद्धिं संवसमाणस्स[4],

इह खलु गाहावई अप्पणो सअट्ठाए अगणिकायं उज्जालेज्ज वा, पज्जालेज्ज वा, विज्झावेज्ज वा ।

१—वसमाणस्स (ब) ।
२—पहति (क) ; × (च, ब) ; वहति (अ) ।
३—उद्दति वा उद्दवेति (घ) ; उद्दवंति वा उद्दवेति (छ) ।
४—वस ° (अ, घ, च, छ, ब) ।

अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अगणिकायं उज्जालेंतु वा मा वा उज्जालेंतु, पज्जालेंतु वा मा वा पज्जालेंतु, विज्झावेंतु वा मा वा विज्झावेंतु ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं तहप्पगारे (सागारिए?) उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२४–आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स,

इह खलु गाहावइस्स कुंडले वा, गुणे वा, मणी वा, मोत्तिए वा, 'हिरण्णे वा'[1], 'सुवण्णे वा'[2], कडगाणि वा, तुडियाणि वा, तिसरगाणि[3] वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा, रयणावली वा, तरुणियं वा कुमारिं अलंकिय-विभूसियं पेहाए,

अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एरिसिया वा सा णो वा एरिसिया—इति वा णं बूया, इति वा णं मणं साएज्जा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं तहप्पगारे (सागारिए?) उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२५–आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स,

इह खलु गाहावइणीओ वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-

१—× (अ)।
२—× (ठ)।
३—तिसराणि (च)।

सुण्हाओ वा, गाहावइ-धाईओ वा, गाहावइ-दासीओ वा, गाहावइ-कम्मकरीओ वा ।

तासिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ, जे इमे भवंति समणा भगवंतो •सीलमंता वयमंता गुणमंता संजया सवुडा बंभचारी० उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एतेसिं कप्पइ मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टित्तए ।

जा य खलु एएहिं सद्धिं मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टेज्जा, पुत्तं खलु सा लभेज्जा—ओयस्सि तेयस्सि वच्चस्सि जसस्सि संपराइयं[1] आलोयण-दरिसणिज्ज ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तासिं च णं अण्णयरी सड्ढी[2] त तवस्सि भिक्खुं मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टावेज्जा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो०,

जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२६—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति बेमि ।०

१—सपहारियं (अ) ।

२—सहियं (अ) ; सहित (ख) ।

तहप्पगारं संथारगं—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, लहुयं अप्पडिहारियं,
तहप्पगारं संथारगं[1]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

६०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, लहुयं पाडिहारियं णो अहाबद्धं,
तहप्पगारं संथारगं—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

६१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, लहुयं पाडिहारियं अहाबद्धं,
तहप्पगारं संथारयं—•फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे० लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

संथारग-पडिमा-पदं

६२–इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइक्कम्म अह भिक्खू जाणेज्जा,
इमाहिं चउहिं पडिमाहिं संथारगं एसित्तए ।

६३–तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—
से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय संथारगं जाएज्जा, तंजहा—इक्कडं वा, कढिणं[2] वा, जंतुयं वा, परगं

१–क्वचित् 'सेज्जा संथारगं' इति पाठोऽस्ति । तत्र 'सेज्जा' लिपिदोषेण प्रक्षिप्त इति संभाव्यते ।

२–कढिणगं (ध) ।

वा, मोरगं[1] वा, तणं[2] वा, कुसं वा, 'कुच्चगं वा'[3], पिप्पलगं वा, पलालगं वा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा भगिणि! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं?

तहप्पगारं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं •ति मण्णमाणे० लाभे संते पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा ।

६४—अहावरा दोच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए संथारगं जाएज्जा, तंजहा—गाहावइं वा, गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासि वा, कम्मकरं वा, कम्मकरिं[4] वा,

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा भगिणि! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं?

तहप्पगारं संथारगं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं •ति मण्णमाणे लाभे संते० पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ।

६५—अहावरा तच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, ते तत्थ अहासमण्णागए, तंजहा—इक्कडे वा, •कढिणे वा, जंतुए वा, परगे वा, मोरगे वा, तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा,

---

१—पोरग (घ) ।

२—तणगं (क, च, छ, ब) ।

३—कुच्चग वा वच्चग वा (चू) ।

४—कम्मकरी (अ, घ, ब), कम्मकरीय (च, छ) ।

३१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा ससिणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उव्वट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा।

३२—अह पुण एवं जाणेज्जा विगओदए मे काए, वोच्छिन्न-सिणेहे[1] मे काए,
तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा (जाव ३।३१) पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

३३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे णो परेहिं सद्धिं
परिजविय-परिजविय गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

जंघासंतारिम-उदग-पदं

३४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से जंघा-संतारिमे उदए सिया,
से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पादे य पमज्जेज्जा, २ त्ता •सागारं भत्तं पच्चक्खाएज्जा, २ त्ता° एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले किच्चा, तओ संजयामेव जंघा-संतारिमे उदए[2] अहारियं रीएज्जा।

३५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघा-संतारिमे उदगे अहारियं रीयमाणे, णो 'हत्थेण हत्थं'[3] पाएण पायं, काएण कायं, आसाएज्जा। 'से अणासायमाणे'[4], तओ संजयामेव जंघा-संतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा।

१—छिन्न° (क, घ, च, ब)।
२—उदगंसि (क, घ, च)।
३—हत्थेण वा हत्थ (अ) (सर्वत्र)।
४—से अणासादए अणा° (अ)।

३६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघा-संतारिमे उदए अहारियं रीयमाणे णो साय-वडियाए[1], णो परदाह-वडियाए, महइ महालयंसि उदगंसि काय विउसेज्जा, तओ संजयामेव जंघा-संतारिमे उदए अहारिय रीएज्जा ।

३७—अह पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ सजयामेव उदउल्लेण वा ससणिद्धेण[2] वा काएण दगतीरए[3] चिट्ठेज्जा ।

३८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा कायं, ससणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा ।

३९—अह पुणेवं जाणेज्जा—विगतोदए मे काए, छिण्णसिणेहे मे काए,

तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा *पमज्जेज्ज वा संलिहेज्ज वा णिल्लिहेज्ज वा उव्वलेज्ज वा जव्वट्टेज्ज वा आयावेज्ज वा° पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो मट्टियामएहिं पाएहिं हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, विकुज्जिय-विकुज्जिय, विफालिय-विफालिय, उम्मग्गेणं हरिय-वहाए गच्छेज्जा । "जहेयं[4] पाएहिं मट्टियं खिप्पामेव हरियाणि अवहरंतु" ।

माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।

से पुव्वामेव अप्पहरियं मग्गं पडिलेहेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

१—साया° (अ) ।
२—ससिणिद्धेण (च) ।
३—उदगतीरए (घ) ।
४—जमेतं (छ) ।

पवुट्ठदेवे[1] ति वा, निवुट्ठदेवे ति वा, पडउ वा वासं मा वा पडउ, णिप्फज्जउ वा सस्सं[2] मा वा णिप्फज्जउ, विभाउ वा रयणी मा वा विभाउ, उदेउ वा सूरिए मा वा उदेउ, सो वा राया जयउ मा वा जयउ—णो एतप्पगारं भासं भासेज्जा पण्णवं।

१७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अंतलिक्खे ति वा, गुज्झाणुचरिए ति वा, संमुच्छिए ति वा, णिवइए[3] ति वा 'पओए, वएज्ज'[4] वा वुट्ठबलाहगे ति वा।

१८—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि।

—ति बेमि।

बीओ उद्देसो

कक्कस-भासा-पद

१९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

गंडी गंडी ति वा, कुट्ठी कुट्ठी ति वा, रायंसी रायंसी ति वा, अवमारियं अवमारिए ति वा, काणियं काणिए ति वा, झिमियं झिमिए ति वा, कुणियं कुणिए ति वा, खुज्जियं खुज्जिए ति वा, उदरी उदरी ति वा, मूयं मूए ति

१—पवुट्ठो° (अ)।
२—सासं (अ, ब)।
३—णिवडिए (च)।
४—तओ एवं वदेज्जा (छ)।

वा, सूणियं सूणिए ति वा, गिलासिणी गिलासिणी ति वा, वेवई वेवई ति वा, पीढसप्पी पीढसप्पी ति वा, सिलिवयं सिलिवए ति वा°, महुमेहणी महुमेहणी[1] ति वा, हत्थछिन्नं हत्थछिन्ने ति वा, •'पादछिन्नं पादछिन्ने ति वा, नक्कछिन्नं नक्कछिन्ने ति वा, कण्णछिन्नं कण्णछिन्ने ति वा, ओट्ठछिन्नं° ओट्ठछिन्ने ति वा'[2] जे यावण्णे तहप्पगारे तहप्पगाराहि[3] भासाहि बुइया-बुइया[4] कुप्पंति माणवा, तेयावि तहप्पगाराहिं भासाहि अभिकंख णो भासेज्जा ।

अकक्कस-भासा-पदं

२०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा तहावि ताइं एवं वएज्जा[5] तंजहा–

ओयंसी ओयंसी ति वा, तेयंसी तेयसी ति वा, वच्चसी वच्चंसी ति वा, जससी जसंसी ति वा, अभिरूवं अभिरूवे ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा, पासाइयं पासाइए ति वा, दरिसणिज्जं दरिसणीए ति वा, जे यावण्णे तहप्पगारा तहप्पगाराहिं[6] भासाहिं बुइया-बुइया णो कुप्पंति माणवा, ते यावि तहप्पगारा एयप्पगाराहिं[7] भासाहिं अभिकंख भासेज्जा[8] ।

१—महुमेही (छ) ।
२—एव पाद नक्क कण्ण ओट्ठ° (अ) ; एव पाद कण्ण नक्क° (छ, व) ।
३—एयप्प° (क, छ) ।
४—× (अ) ।
५—भासेज्जा (छ) ।
६—एयप्प° (अ, घ, च) ।
७—पूर्व सूत्रे 'तहप्पगाराहि' विद्यते किन्तु अत्र प्रतिषु तथा नास्ति ।
८—भासेज्जा । तहप्पगार भास अगावज्ज जाव भासेज्जा (अ, व) ।

सावज्ज-असावज्ज-भासा-पद

२१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा, तंजहा–

वप्पाणि वा, •फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गलपासगाणि वा, गड्डाओ वा, दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्खं वा चेइय-कडं, थूभं वा चेइय-कडं, आएसणाणि वा, आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, बद्ध-कम्मंताणि वा, वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा,° भवण-गिहाणि वा–तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तंजहा–

सुकडे ति वा, सुठ्ठुकडे ति वा, 'साहुकडे ति वा, कल्लाणे ति वा'[1], करणिज्जे ति वा–

एयप्पगारं भासं सावज्जं •सकिरियं कक्कसं कडुयं निट्ठुरं फरुसं अण्हयकरिं छेयणकरिं भेयणकरिं परितावणकरिं उद्दवणकरिं भूतोवघाइयं अभिकंख° णो भासेज्जा।

२२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा, तंजहा–

१–साहुकल्लाण ति वा (अ, छ)।

वप्पाणि वा (जाव ४।२१) भवणगिहाणि वा—तहावि ताइं एव वएज्जा, तंजहा—

आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा, पासादियं पासादिए ति वा, दरिसणीयं दरिसणीए ति वा, अभिरूवं अभिरूवे ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा—

एयप्पगारं भासं असावज्जं °अकिरियं अकक्कसं अकडुयं अनिट्ठुरं अफरुसं अणण्हयकरिं अछेयणकरि अभेयणकरि अपरितावणकरि अणुद्दवणकरिं अभूतोवघाइयं अभिकंख° भासेज्जा ।

२३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए तहावि[1] तं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

सुकडे ति वा, सुठ्ठुकडे ति वा, साहुकडे ति वा, कल्लाणे ति वा, करणिज्जे ति वा—

एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

२४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा—

आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा, भद्दयं भद्दए ति वा, ऊसढं ऊसढे ति वा, रसियं रसिए ति वा, मणुण्ण मणुण्णे ति वा—

एयप्पगारं[2] भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

२५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं[3] वा, गोणं वा, महिसं वा, मिगं वा, पसुं वा, पक्खि वा, सरीसिवं वा, जलयरं वा,

---

१—तहाविह (घ, ब)।
२—तहप्प° (अ, च)।
३—माणुस्स (घ, छ)।

से त्तं[1] परिवूढकायं पेहाए णो एवं वएज्जा—थूले ति[2] वा, पमेइले ति वा, वट्टे ति वा, वज्झे ति वा, पाइमे ति वा—
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा।

२६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं (जाव ४।२५) जलयरं वा, से त्तं परिवूढकायं पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा—
परिवूढकाए ति वा, उवचियकाए ति वा, थिरसंघयणे ति वा, चियमंससोणिए ति वा, बहुपडिपुण्णइंदिए ति वा—
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए णो एवं वएज्जा, तंजहा—
गाओ दोज्झाओ[3] ति वा, दम्मे[4] ति वा, गोरहे[5] ति वा,
'वाहिमा ति वा, रहजोग्गाति वा'[6]—
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा।

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा—
जुवंगवे ति वा, धेणू ति वा, रसवती ति वा, हस्से[7] ति वा,
महल्लए[8] ति वा, महव्वए ति वा, संवहणे ति वा—
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) अभिकंख भासेज्जा।

१—त (छ)।
२—थुल्ले (अ, क, च, छ)।
३—दोज्झा (अ, क, च, छ, ब)।
४—दम्मा (अ, च, ब)।
५—गोरहा (अ, च, ब)।
६—वाहनयोग्यो रथयोग्य· (वृ)।
७—ह्रस्से (घ, छ); रहस्से (ब)।
८—महल्ले (छ, ब)।

२९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तहेव गंतुमुज्जाणाइं पव्वयाइं वणाणि य[1] रुक्खा महल्ला पेहाए णो एवं वएज्जा, तंजहा–
पासायजोग्गा ति वा, 'गिहजोग्गा ति वा, तोरणजोग्गा'[2] ति वा, 'फलिहजोग्गा ति वा, अग्गल'[3]-नावा-उदगदोणि-पीढ-चंगवेर[4]-णंगल-कुलिय-जंतलट्ठी-णाभि-गंडी-आसण-सयण-जाण-उवस्सय-जोग्गा ति वा–
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तहेव गंतुमुज्जाणाइं पव्वयाणि वणाणि य रुक्खा महल्ला पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा–
जातिमंता ति वा, दीहवट्टा ति वा, महालया ति वा, पयायसाला ति वा, विडिमसाला ति वा, पासाइया ति वा, दरिसणीयाति वा, अभिरूवा ति वा, पडिरूवा ति वा–
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) अभिकंख भासेज्जा।

३१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया वणफला पेहाए तहावि ते णो एवं वएज्जा, तंजहा–
पक्का ति वा, पायखज्जा ति वा, वेलोचिया[5] ति वा, टाला ति वा, वेहिया ति वा–
एयप्पगारं भासं सावज्ज (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया 'वणफला अंबा'[6] पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा–

१–वा (च, ब) ।
२–तोरणजोग्गा ति वा गिहजोग्गा (अ. ब) ।
३–अग्गलजोग्गा ति वा फलिह (च) ।
४–सिंगवेर (अ, ब) ।
५–वेलोविगा (अ) ; वेलोतिया (क, घ, च) , वेलोविया (ब) ।
६–वणफणा (क, च, ब) , फलअंबा (वृ) ।

असंथडा इ वा, बहुणिवट्टिमफला ति वा, बहुसंभूया इ वा, भूयरूवा ति वा—

एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए तहावि ताओ णो एवं वएज्जा, तंजहा—

पक्का ति वा, नीलिया ति वा, छवीया[1] ति वा, लाइमा ति वा, भज्जिमा ति वा, बहुखज्जा ति वा—

एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा—

रूढा ति वा, बहुसंभूया ति वा, थिरा ति वा, ऊसढा ति वा, गब्भिया ति वा, पसूया ति वा, ससारा[2] ति वा—

एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सद्दाइं सुणेज्जा, तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

सुसद्दे ति वा, 'दुसद्दे ति वा'[3]—

एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सद्दाइं सुणेज्जा[4], ताइं एवं वएज्जा, तंजहा—

१—छवी (अ)।
२—ससारा (अ, छ)।
३—× (च, छ)।
४—× (अ, क, च, छ, ब)।

सुसद्दं सुसद्दे ति वा, 'दुसद्दं दुसद्दे ति वा'[1]—
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३७–एवं···रूवाइं·····कण्हे ति वा, णीले ति वा, लोहिए ति वा, हालिद्दे ति वा, सुकिल्ले ति वा,
गंधाइं·····सुब्भिगंधे ति वा, दुब्भिगंधे ति वा,
रसाइं·····तित्ताणि वा, कडुयाणि वा, कसायाणि वा, अंबिलाणि वा, महुराणि वा,
फासाइं·····कक्खडाणि वा, मउयाणि वा, गुरुयाणि वा, लहुयाणि वा, सीयाणि वा, उसिणाणि वा, णिद्धाणि वा, रुक्खाणि वा ।

अणुवीइ-णिट्ठा-भासि-पदं

३८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा वंता 'कोहं च माणं च मायं च लोभं च'[2], अणुवीइ णिट्ठाभासी णिसम्म-भासी अतुरिय-भासी विवेग-भासी समियाए संजए भासं भासेज्जा ।

३९–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

१–× (च, छ)।
२–कोहवयणं माण वा ४ (क, घ, च,

पंचमं अज्झयणं

वत्थेसणा

पढमो उद्देसो

वत्थजाय-पदं

१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं एसित्तए, सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तंजहा–
जंगियं वा, भंगियं वा, साणयं वा, पोत्तगं वा, खोमियं वा, तूलकडं वा–तहप्पगारं वत्थं–

२–जे णिग्गंथे तरुणे जुगवं[1] बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे, से एगं वत्थं धारेज्जा, णो बितियं।

३–जा णिग्गंथी, सा चत्तारि संघाडीओ धारेज्जा–एगं दुहत्थवित्थारं, दो तिहत्थवित्थाराओ, एगं चउहत्थवित्थारं। तहप्पगारेहिं[2] वत्थेहिं असंविज्जमाणेहिं[3] अह पच्छा एगमेगं संसीवेज्जा।

अद्धजोयण-मेरा-पदं

४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयणमेराए वत्थपडियाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

अस्सिपडियाए-पदं

५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा–
अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, [*]भूयाइं,

१–जुवं (ब)।
२–एएहिं (अ, च, ब)।
३–अविज्ज° (अ, ब)।

जीवाइं, सत्ताइ, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति ।

तं तहप्पगार वत्थ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, वहिया णीहडं वा अणीहड वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा— अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा° ।

६–°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण वत्थं जाणेज्जा— अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइ, भूयाइं, जीवाइ, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहड आहट्टु चेएति ।

त तहप्पगार वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसतरकड वा, वहिया णीहड वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्त वा अपरिभुत्त वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा– अफासुय अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा।

७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा– अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइ, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहड आहट्टु चेएति ।

त तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, वहिया णीहड वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा– अफासुयं अणेसणिज्ज ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा–

अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा–अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-वत्थ-पद

९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा–

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा–अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

१०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा–

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ।

तं तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठिय, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

११—अह पुण एवं जाणेज्जा—

पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।°

भिक्खु-पडियाए-कीयमाइ-पदं

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थ जाणेज्जा—

असंजए भिक्खु-पडियाए कीयं वा, धोयं वा, रत्तं वा, घट्टं वा, मट्ठं वा, संमट्ठं[1] वा, संपधूमियं[2] वा—तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं, •अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे सते° णो पडिगाहेज्जा ।

१३—अह पुणेवं जाणेज्जा—

पुरिसंतरकडं, •बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-पद

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण वत्थाइं जाणेज्जा विरूवरूवाइं महद्धणमोल्लाइं तजहा—

आजिणगाणि[3] वा, सहिणाणि[4] वा, सहिण-कल्लाणाणि वा, आयकाणि[5] वा, कायकाणि[6] वा, खोमयाणि वा, दुगुल्लाणि

१—ससट्ठ (क) ।

२—° धूवितं (अ, छ) ।

३—आतिणाणि (अ) ; अजिणमाणि (क, च) ।

४—सहणाणि (छ) ।

५—आयाणाणि (अ, क, घ, च) ; आयाण (व) ।

६—कायाणाणि (घ, व) ।

वा, मलयाणि वा, पत्तुण्णाणि वा अंसुयाणि वा, चीणंसुयाणि वा, देसरागाणि[1] वा, अमिलाणि वा, गज्जलाणि वा, फालियाणि[2] वा, कोयहा(वा?)णि[3] वा, कंबलगाणि वा, पावाराणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं वत्थाइं महद्धणमोल्लाइं—*अफासुयाइं अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे[1] लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण आईणपाउरणाणि वत्थाणि[4] जाणेज्जा, तंजहा—
उट्टाणि[5] वा, पेसाणि[6] वा, पेसलेसाणि वा, किण्हमिगाईणगाणि वा, णीलमिगाईणगाणि वा, गोरमिगाईणगाणि वा, कणगाणि वा, कणगकताणि[7] वा, कणगपट्टाणि वा, कणगखइयाणि वा, कणगफुसियाणि वा, वग्घाणि वा, विवग्घाणि वा, आभरणाणि वा, आभरणविचित्ताणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं आईणपाउरणाणि वत्थाणि—*अफासुयाइं अणेसणिज्जाइ ति मण्णमाणे[1] लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

वत्थपडिमा-पद

१६–इच्चेयाइं आयतणाइ उवाइक्कम्म, अह भिक्खू जाणेज्जा चउहि पडिमाहि वत्थं एसित्तए ।

१—वेसरागाणि (अ), देसर गि (छ); वेसराणि (व) ।
२—फलियाणि (क, च, छ, ब) ।
३—कायहाणि (अ), कोहयाणि (ध); निशीथस्य १७ उद्देशकस्य चूर्णौ 'कोतवाणि' इति पाठो लभ्यते ।
४—वा वत्थाणि वा (क, छ) ।
५—उट्टाणि (अ, क, च, व, वृ), उट्टवाणि (ध), आड्डाणि (छ) ।
६—पेसणाणि (छ) ।
७—कणगकताणि (अ, क, ध, च, छ, व), कनककान्तीनि (वृ) ।

१७–तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा–

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय वत्थं जाएज्जा, तंजहा–

जंगियं वा, भंगियं वा, साणयं वा, पोत्तयं वा, खोमियं वा, तूलकडं वा–तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा–फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा। पढमा पडिमा।

१८–अहावरा दोच्चा पडिमा–

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए-पेहाए वत्थं जाएज्जा, तंजहा–

गाहावइं वा, *गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणि वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा°, कम्मकरिं वा,

से पुव्वामेव आलोएज्जा, आउसो! त्ति वा, भगिणि! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णतरं वत्थं? तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा–फासुयं *एसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा। दोच्चा पडिमा।

१९–अहावरा तच्चा पडिमा–

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तंजहा–

अंतरिज्जगं वा उत्तरिज्जगं वा–तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, *परो वा से देज्जा–फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा। तच्चा पडिमा।

२०–अहावरा चउत्था पडिमा–

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं वत्थं जाएज्जा,

जं चऽण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से[1] देज्जा—फासुयं •एसणिज्जं[2] ति मण्णमाणे लाभे संते० पडिगाहेज्जा । चउत्था पडिमा ।

२१—इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं •अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवण्णे ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अन्नोन्नसमाहीए, एवं च णं विहरंति ।०

संगार-वयण-पदं

२२—सियाणं एयाए एसणाए एसमाणं परो वएज्जा—आउसंतो! समणा! एज्जाहि तुमं मासेण वा, दसराएण वा, पंचराएण वा, सुए वा, सुयतरे[3] वा, तो ते वयं आउसो! अण्णयरं वत्थं दाहामो[4] ।

एयप्पगारं[5] णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे[6] संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं? इयाणिमेव दलयाहि ।

१—ण (अ, ब) ।
२—°य (अ) ।
३—°तराए (घ, च, छ, ब) ।
४—दासामो (अ, च, ब) ।
५—तहप्प° (अ) ।
६—°गार (छ) ।

से सेवं[1] वयंतं परोवएज्जा आउसंतो! समणा! अणुगच्छाहि, तो ते वयं अण्णतरं वत्थं दाहामो।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे सगार-वयणे पडिसुणेत्तए, अभिकंखसि मे दाउं? इयाणिमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतं परो णेत्ता वदेज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेयं वत्थं समणस्स दाहामो। अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स (वत्थं[2]) चेइस्सामो।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा।

वत्थ-आघसण-पद

२३—सिया णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेयं वत्थं—सिणाणेण वा, •कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा० आघंसित्ता वा, पघंसित्ता वा समणस्स णं दासामो।"

एयप्पगार णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयं तुमं वत्थं सिणाणेण वा (जाव) पघंसाहि वा। अभिकंखसि मे दाउं? एमेव दलयाहि।"

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा (जाव) पघंसित्ता वा

१—णेव (क, घ, च, छ), एव (ब)।
२—जाव (अ, क, घ, च, छ, ब)।

दलएज्जा। तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा।

वत्थ-उच्छोलण-पद

२४—से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेयं वत्थं—सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा[1], पधोवेत्ता[2] वा समणस्स णं दासामो।"

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयं तुमं वत्थं सिओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पधोवेहि वा। अभिकंखसि •मे दाउं? एमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा दलएज्जा। तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा।

वत्थ-विसोहण-पदं

२५—से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेयं वत्थं—कंदाणि वा, •मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा०, हरियाणि वा विसोहित्ता समणस्स णं दासामो।"

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयाणि

१—× (छ)।
२—पच्छोलेत्ता (छ)।

तुमं कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहेहि। णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे वत्थे पडिगाहित्तए।"

से सेवं वयंतस्स परो कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहित्ता दलएज्जा। तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा।

वत्थ-पडिलेहण-पद

२६–सिया से परो णेत्ता वत्थं णिसिरेज्जा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा तुमं चेव णं संतियं वत्थं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि।

२७–केवली बूया—आयाण मेयं 'वत्थंतेण उ'[1] बद्धे सिया कुंडले वा, गुणे वा, मणी वा, •मोत्तिए वा, हिरण्णे वा, सुवण्णे वा, कडगाणि वा, तुडयाणि वा, तिसरगाणि वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा०, रयणावली वा, पाणे वा, बीए वा, हरिए वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो०, जं पुव्वामेव वत्थं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा।

सअडाइ-वत्थ-पदं

२८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—

सअंडं •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा०-संताणगं—

तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा।

१—वत्थे ते उ (च); वत्थेण उ (घ, व)।

ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्नसमाहीए, एवं च णं विहरंति ।°

संगार-वयण-पदं

२१–से णं एताए एसणाए एसमाणं परो पासित्ता वएज्जा—आउसंतो! समणा! एज्जासि तुमं मासेण वा, °दसराएण वा, पंचराएण वा, सुए वा, सुयतरे वा तो ते वयं आउसो! अण्णयरं पायं दाहामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा आउसंतो! समणा! अणुगच्छाहि तो ते वयं अण्णतरं पायं दाहामो ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा–आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणेत्तए अभिकंखसि मे दाउं? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो णेत्ता वदेज्जा–आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेयं पायं समणस्स दाहामो । अवियाइं वय पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स पायं[1] चेइस्सामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं पायं–अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।°

पाय-अब्भंगण-पदं

२२–से णं परो णेत्ता वएज्जा–आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा

१—जाव (अ, क, घ, च, छ, ब)।

आहरेयं पायं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, 'वसाए वा'[1] अब्भंगेत्ता वा, •मक्खेत्ता वा समणस्स णं दासामो। एयप्पगार णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयं तुमं पायं तेल्लेण वा (जाव) अब्भगाहि वा मक्खाहि वा अभिकंखसि मे दाउं? एमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतस्स परो तेल्लेण वा (जाव) मक्खेत्ता वा दलएज्जा—तहप्पगारं पाय—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा।

पाय-आघसण-पद

२३—से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेय पाय सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसित्ता वा, पघंसित्ता वा समणस्स णं दासामो।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयं तुमं पायं सिणाणेण वा (जाव) आघंसाहि वा पघंसाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं? एमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा (जाव) पघंसित्ता वा दलएज्जा—तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

पाय-उच्छोलण-पदं

२४—से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा

---

[1]—× (क, च, ब)।

खलु आउसो! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'[1] ओग्गहं ओग्गिण्हिसामो, तेण परं विहरिस्सामो।

२४–से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि? जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा छत्तए वा, *मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया वा, नालिया वा, चेलं वा, चिलिमिली वा, चम्मए वा, चम्मकोसए वा°, चम्मछेदणए वा, तं णो अंतोहिंतो बाहिं णीणेज्जा, बहियाओ वा णो अंतो पवेसेज्जा, सुत्तं[2] वा णं पडिबोहेज्जा, णो तेसिं किंचि[3] अप्पत्तियं पडिणीयं करेज्जा।

अंब-पदं

२५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा अंबवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा। कामं खलु *आउसो! अहालंदं अहा-परिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामो, तेण परं° विहरिस्सामो।

२६–से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि?

अह भिक्खु[4] इच्छेज्जा अंबं भोत्तए वा, (पायए वा?)। सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—

सअंडं *सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं संउत्तिंग-पणग-

१—एताव (अ, घ, च, ब), एतावता (क, छ)।
२—णो सुत्तं वा णं (अ, ब)।
३—किंचिवि (क, घ, च, ब)।
४—भिक्खुण (छ)।

दग-मट्टिय-मक्कडा-°संताणगं। तहप्पगारं अंवं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

२७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अंवं जाणेज्जा—
अप्पंडं •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-°संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

२८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अंवं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा।

२९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा अंवभित्तगं वा, अंबपेसियं वा, अंवचोयगं वा, अंवसालगं वा, अंवडगलं[1] वा भोत्तए वा, पायए वा। सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अंवभित्तगं वा (जाव) अंवडगलं वा सअंडं (जाव ७।२६) संताणगं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

३०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अवभित्तगं वा (जाव ७।२९) अंवडगलं वा अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

३१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अंवभित्तगं[2] वा (जाव ७।२९) अंवडगलं वा अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा।

१—° डालग (अ, क, घ, च, छ, व)।
२—अंव वा अवचित्तगं (घ, च, छ)।

सेज्जा भवेज्जा, सपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा,

सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, तहप्पगाराहि सेज्जाहिं संविज्जमाणाहिं[२] पग्गहिय-तरागं विहरेज्जा, णेव किंचिवि वएज्जा[१] ।

३१—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, *जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया० जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

१—चरेज्जा (अ)।

नवमं अज्झयणं

णिसीहिया-सत्तिक्कयं

णिसीहिया-एसणा-पदं

१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा णिसीहियं गमणाए, सेज्जं[1] पुण णिसीहियं जाणेज्जा–

संअंडं •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडा-संताणयं,

तहप्पगारं णिसीहियं–अफासुयं अणेसणिज्जं •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो चेतिस्सामि[2] (चेएज्जा ?)।

२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा णिसीहियं गमणाए, सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा–

अप्पंडं •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडा-संताणयं,

तहप्पगारं णिसीहियं—फासुयं एसणिज्जं •ति मण्णमाणे° लाभे संते चेतिस्सामि[3] (चेएज्जा ?)।

अस्सि पडियाए-णिसीहिया-पदं

३–•सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा–

अस्सि पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति।

१—से (अ, क, घ, च, ब)।

२—वृत्तौ 'परिगृह्णीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठः सम्भवतो लिपिदोषेण जातः। प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गत पाठो युज्यते।

३—वृत्तौ 'गृण्हीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठः सम्भवतो लिपिदोषेण जातः प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गत पाठो युज्यते।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतरकडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

४–सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा–

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतरकडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

५–सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा–

अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतरकडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

६–सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा–

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं,

भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतरकडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-णिसीहिया-पदं

७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतरकडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण णिसीहियं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अबहिया णीहडाए), अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

करणाणि वा, कवोयट्ठाण-करणाणि वा°, कविजलट्ठाण-करणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं° सद्दाइं *कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—महिस-जुद्धाणि वा, वसभ-जुद्धाणि वा, अस्स-जुद्धाणि वा, हत्थि-जुद्धाणि वा, *कुक्कुड-जुद्धाणि वा, मक्कड-जुद्धाणि वा, लावय-जुद्धाणि वा, वट्टय-जुद्धाणि वा, तित्तिर-जुद्धाणि वा, कवोय-जुद्धाणि वा°, कविंजल-जुद्धाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—'जूहिय-ट्ठाणाणि'[1] वा, हयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, गयजूहिय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति, तंजहा—अक्खाइय-ट्ठाणाणि वा, माणुसमाणिय-ट्ठाणि वा, महया ऽाहय-णट्ट-गीय-वाइय-तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्प-वाइय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति, तंजहा—कलहाणि वा, डिंबाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा—अण्णयराइं वा

१—निशीथे १२ उद्देशके २६ सूत्रे 'उज्जूहिया ठाणाणि' इति पाठो विद्यते।

तहप्पगाराइं •विरूव-रूवाइं० सद्दाइं •कण्णसोय-पडियाए० णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा •अहावेगइयाइं० सद्दाइं सुणेति, तंजहा—खुड्डियं दारियं परिवुत्तं[1] मंडियालंकियं[2] निवुज्झमाणिं पेहाए, एगं पुरिसं वा वहाए णीणिज्जमाणं पेहाए—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं •विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए० णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूव-रूवाइं महासवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहुपच्चंताणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं महासवाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूव-रूवाइं महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा–इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि[3] वा, आभरण-विभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि वा, विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुजंताणि वा, परिभाइंताणि वा, विच्छड्डियमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा–अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं महुस्सवाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

सद्दासत्ति-पदं

१९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहिं सद्देहिं, णो

१—परिभुय (क्वचित्) ; मण्डितालकृता वहुपरिवृता (वृ)।
२—मडिय° (घ, छ)।
३—मज्झ° (छ, व)।

वा, लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

६९–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

[(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।]

७०–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदेज्ज वा, विच्छिंदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

७१–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदित्ता वा, विच्छिंदित्ता वा, पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

मल-णीहरण-पदं

७२–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, यंकंसि वा

तुयट्टावेत्ता कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

७३–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

वाल-रोम-पदं

७४–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं, दीहाइं कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

लिक्ख-जूया-पदं

७५–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।[०]

आभरण-आविंधण-पद

७६–(से से परो) (से अणमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावित्ता हारं वा, अद्धहारं वा, उरत्थं वा, गेवेयं[1] वा, मउडं वा, पालंबं वा, सुवण्णसुत्तं वा आविंधेज्ज[2] वा, पिणिधेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

१—सुवण्णगेवेय (घ)।
२—आवधेज्ज (ध, च)।

[दिव्वो मणुस्सघोसो, तुरियाणिणाओ य सक्कवयणेण।
खिप्पामेव णिलुक्को, जाहे पविज्जइ चरित्तं ॥१८॥

पडिवज्जित्तु चरित्तं, अहोणिसिं सव्वपाणभूतहितं।
साहट्टु[1] लोमपुलया, पयया देवा निसामिंति ॥१९॥]

मणपज्जवनाण-लद्धि-पदं

३३—तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइयं खाओवसमियं चरित्तं पडिवन्नस्स मणपज्जवणाणे णामं णाणे समुप्पन्ने—अड्ढाइज्जेहिं दीवेहिं दोहि य समुद्देहि सण्णीणं पंचेंदियाणं पज्जत्ताणं वियत्तमणसाणं[2] मणोगयाइं भावाइं जाणेइ।

अभिग्गह-पदं

३४—तओ णं समणे भगवं महावीरे पव्वइते समाणे मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं पडिविसज्जेति, पडिविसज्जेत्ता इमं[3] एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—"बारसवासाइं वोसट्ठकाए चत्तदेहे[4] जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति[5], तंजहा—दिव्वा वा, माणुसा वा, तेरिच्छिया[6] वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पण्णे समाणे 'स अणाइले अव्वहिते अद्दीणमाणसे तिविह मणवयण-कायगुत्ते'[7] सम्मं सहिस्सामि, खमिस्सामि अहियासइस्सामि।"

१—साहट्टु (अ, क, ब)।
२—[10] मणुस्साण (छ)।
३—तओण इमं (छ)।
४—चियत्त° (च, छ, ब)।
५—समुप्पज्जति (घ, छ, ब)।
६—तेरिच्छा (च, ब)।
७—× (अ, क, घ, च, ब)।

विहार-पदं

३५–तओ णं समणे भगवं महावीरे इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हेत्ता 'वोसट्ठकाए चत्तदेहे'[1] दिवसे मुहुत्तसेसे कम्मारं[2] गामं समणुपत्ते।

३६–तओ णं समणे भगवं महावीरे वोसट्ठचत्तदेहे अणुत्तरेणं आलएणं, अणुत्तरेणं विहारेणं, अणुत्तरेणं संजमेणं, अणुत्तरेणं पग्गहेणं, अणुत्तरेणं संवरेणं, अणुत्तरेणं तवेणं, अणुत्तरेणं बंभचेरवासेणं, अणुत्तराए खंतीए, अणुत्तराए मोत्तिए, अणुत्तराए तुट्ठीए, अणुत्तराए समितीए, अणुत्तराए गुत्तीए, अणुत्तरेण ठाणेणं, अणुत्तरेणं कम्मेणं[3], अणुत्तरेणं सुचरिय-फलणिव्वाणमुत्तिमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

३७–एवं विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुपज्जिसु[4]—दिव्वा वा माणुसा[5] वा तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने समाणे अणाइले अव्वहिए अदीण-माणसे[6] तिविहमणवयण-कायगुत्ते सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ।

केवलनाण-लद्धि-पद

३८–तओ ण समणस्स भगवओ महावीरस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स बारसवासा विइक्कंता, तेरसमस्स य वासस्स परियाए वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे—वइसाहसुद्धे, तस्सणं वइसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेणं,

---

१—वोसट्ठचत्तदेहे (क, घ), वोसट्ठचियत्तदेहे (छ)।
२—कुमार (क, घ, च, छ, ब)।
३—कम्मेण (क, घ, च, छ)।
४—°पज्जति (क, ब, त्र)।
५—माणुस्सा (च)।
६—अद्दीण-° (अ, घ, च)।

१०--जमाहु ओह सलिलं अपारगं,
महासमुद्दं व भुयाहि दुत्तरं।
अहे य[1] णं परिजाणाहि पंडिए,
से हू मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ ॥

११--जहा हि बद्धं इह 'माणवेहि य'[2],
जहा य तेसिं तु विमोक्ख आहिओ।
अहा तहा बंधविमोक्ख जे विऊ,
से हु मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ ॥

१२--इमंमि लोए 'परए य दोसुवि'[3],
ण विज्जइ बंधण जस्स किंचिवि।
से हु णिरालंबणे अप्पइट्ठिए,
कलंकली भावपहं विमुच्चइ ॥

—त्ति बेमि।

१—व (अ, क, ब)।
२—माणवेहिं (अ, क)
३—परलोय ते सु वि (

परिशिष्ट-१

आयारो

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और आधार-स्थल निर्देश

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
आगममाणे (जाव) सम्मत्तमेव	८।९५-९६,१२३-१२४	८।७८-८०
एव दक्खिणाओ वा पच्चत्थिमाओ वा उत्तराओ वा उड्ढाओ वा (जाव) अन्नयरीओ	१।३	१।१
एवं परिघेतव्वं ति, उद्दवेयव्वंति	५।१०१	१०१
एवं हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए नहाए ण्हारुणीए अट्ठीए अट्ठिमिंजाए अट्ठाए अणट्ठाए	१।१४०	१।१४०
गाम वा (जाव) रायहाणिं	८।१२६	८।१०६
धारेज्जा (जाव) गिम्हे	८।८८-९२	८।४६-५०
परक्कमेज्ज वा (जाव) हुरत्था	८।२३	८।२१
पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसी (जाव) अन्नयरीओ	१।३	१।१
वत्थाइं जाएज्जा (जाव) एयं	८।६४-६७	८।४४-४८
समारब्भ (जाव) चेएइ	८।२४	८।२३

कल्पसूत्र :

तए णं समणे भगवं महावीरे अणगारे जाए इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिए, मणसमिए, वइसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिंदिए, गुत्तबंभयारी, अकोहे, अमाणे, अमाए, अलोभे, संते, पसंते, उवसंते परिनिव्वुडे, अणासवे, अममे, अकिंचणे, छिन्नगंथे, निरुवलेवे, कंसपाई इव मुक्कतोये १, संखो इव निरंजणे २, जीवो इव अप्पडिहयगई ३, गगणं पिव निरालंबणे ४, वायुरिव अप्पडिबद्धे ५, सारयसलिलं व सुद्धहियए ६, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे ७, कुम्मो इव गुत्तिंदिए ८, खग्गिविसाणं व एगजाए ९, विहग इव विप्पमुक्के १०, भारंडपक्खी इव अप्पमत्ते ११, कुंजरो इव सोडीरे १२, वसभो इव जायथामे १३, सीहो इव दुद्धरिसे १४, मंदरो इव अप्पकंपे १५, सागरो इव गंभीरे १६, चंदो इव सोमलेसे १७, सूरो इव दित्ततेए १८, जच्चकणगं व जायरूवे १९, वसुधरा इव सव्वफासविसहे २०, सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंते २१। एतेसिं पदाणं इमातो दुन्नि संघयणगाहाओ—

कंसे संखे जीवे, गगणे वायू य सरयसलिले य।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजर वसभे सीहे, णगराया चेव सागरमखोभे।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव हूयवहे ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधो भवति। से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—

दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु। खेत्तओ णं गामे वा नगरे वा अरण्णे वा खित्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा णहे वा। कालओ णं समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा खणे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊ वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा दीहकालसंजोगे वा। भावओ णं कोहे वा माणे वा मायाए वा लोभे वा भये वा हासे वा पेज्जे वा दोसे वा कलहे वा अब्भक्खाणे वा पेसुन्ने वा परपरिवाए वा अरतिरती वा मायामोसे वा मिच्छादंसणसल्ले वा। तस्स णं भगवंतस्स नो एवं भवइ।

से णं भगवं वासावासवज्जं अट्ठ गिम्हहेमंतिए मासे गामे एगराईए नगरे पंचराईए वासीचंदणसमाणकप्पे समतिणमणिलेट्ठुकंचणे समदुक्खसुहे इहलोगपरलोगअपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मसंगनिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए एवं च णं विहरइ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेण चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं अणुत्तरेणं वीरिएणं अणुत्तरेणं अज्जवेणं अणुत्तरेणं मद्दवेणं अणुत्तरेणं लाघवेणं अणुत्तराए खंतीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तराए गुत्तीए अणुत्तराए तुट्ठीए अणुत्तरेणं सच्चसंजमतवसुचरियसोवचइयफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स दुवालस-संवच्छराइं विइक्कंताइं। तेरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहसुद्धे तस्स णं वइसाहसुद्धस्स दसमीए पक्खेणं पाईणगामिणीए छायाए पोरिसीए अभिमिवट्टाए पमाणपत्ताए सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं जंभियगामस्स नगरस्स बहिया उजुवालियाए नईए तीरे वियावत्तस्स चेईयस्स अदूरसामंते सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि सालपायवस्स अहे गोदोहियाए उक्कुडुयनिसिज्जाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने।

तए णं से भगवं अरहा जाए जिणे केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणइ पासइ, सव्वलोए सव्वजीवाण आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं मणो माणसियं भुत्त कडं पडिसेविय आविकम्म रहोकम्मं अरहा अरहस्सभागी तं तं कालं मणवयणकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ।

४-जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, वक्ष २ (पत्र १४६)

तए णं से भगवं समणे जाए ईरिआसमिए जाव परिट्ठावणिआसमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्ते जाव गुत्तबंभयारी अकोहे जाव अलोहे संते पसंते उवसंते परिणिव्वुडे छिण्णसोए निरुवलेवे संखमिव निरंजणे जच्चकणग व जावरूवे आदरिसपडिभागे इव पागडभावे कुम्मो इव गुत्तिंदिए पुक्खरपत्तमिव निरुवलेवे गगणमिव निरालवगे अणिले इव णिरालए चंदो इव सोमदंसणे सूरो इव तेअंसी विहग इव अपडिबद्धगामी सागरो इव गंभीरे मंदरो इव अकंपे पुढवी विव सव्वफासविसहे जीवो विव अप्पडिहयगइत्ति। णत्थि णं तस्स भगवतस्स कत्थइ पडिबंधे, से पडिबंधे चउव्विहे भवंति, तंजहा—

दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ इह खलु माया मे पिया मे भाया मे भगिणी में जाव संगंथसंथुआ मे हिरण्णं मे सुवण्ण मे जाव उवगरणं मे, अहवा समासओ सचित्ते वा अचित्ते वा मीसए वा दव्वजाए सेव तस्स ण भवइ, खित्तओ गामे वा णगरे वा अरण्णे वा खेत्ते वा खले वा गेहे वा अगणे वा एव तस्स ण भवइ, कालओ थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊए वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा दीहकालपडिबंधे एवं तस्स ण भवइ, भावओ कोहे वा जाव लोहे वा भए वा हासे वा एवं तस्स ण भवइ, से णं भगव वासावासवज्जं हेमंतगिम्हासु गामे एगराइए णगरे पचराइए ववगयहा

अणुपुव्व ६।२५,३२,७५, ७६ ; ८।२७, १०५,१२५ , ८।८।१
अणुपुव्वसो ६।८
अणुपुव्वी ८।८।२
अणुवट्ठिय ४।३
अणुवयमाण ६।८०,९१ ; ८।३
अणुवरय ४।३ , ५।१८
अणुवसु ६।३०
अणुवास
-अणुवासिज्जासि ५।३८
अणुवीइ १।५५ , ४।२७ , ६।१०३,१०४
अणुवेहमाण ५।९७
अणुसचर
-अणुसचरइ १।४,८
अणुसंवेयग ५।१०३
अणुसोय
-अणुसोयति २।७९
अणुस्सिय ५।४३
अणेग १।५३
अणेगचित्त ३।४२
अणेगरूव १।८,१८, २६,४१,४९, ७२,८०,८२,
अणेगरूव १०१,१०९, १२८,१३६, १५२,१६० , २।५५ , ६।७, ९।२।७,९
अणेलिस ६ २ , ८।२६ ; ८।८।१,१७ ; ९।१।१६
अणोमदंसि ३।४८
अणोवहिय ४।३
अणोहंतर २।७१
अण्ण १।३,१८,२१,२६, ३२,४१,४४,४९, ६३,७२,७५,८०, ८८,१०१,१०४, १०९,११६,१२८, १३१,१३६,१४३, १५२,१६०,१६८; २।४६ , ३।४३ ; ६।१०४ , ८।१८, २०,२४
अण्णत्थ ५।४१
अण्णयर २।१५०
अण्णयरी १।१,३
अण्णहा २।११८, ५।५०
अण्णाण ५।१७
अतह ६।४३,८९
अतिअच्च ६।१०;९।१।६
अतारिस ६।२७
अतिदुक्ख ९।२।१४
अतिवट्ट
-अतिवट्टेज्जा ५।११४
अतिवय
-अतिवाएज्ज ६।२३
अतिवाय ९।१।१६
अतिविज्ज ३।२८,३३, ४।३९
अतिवेल ८।८।८
अतिहि २।४१, ९।४।११
अतीत ३।५९,६०
अतीरंगम २।७१
अत्त १।३८,६५ , ३।६४ , ६।१०४
अत्तत्त ६।२५
अत्तसमाहिय ४।३३
अत्थ (अर्थ) १।२५,४८, ७९,१०८, १३५,१५८ , २।२
अत्थ (अत्र) ४।२०, २२,२३
अदत्तहार २।६८,८४

अदविय ६।९७
अदिन्न ८।४
अदिन्नादाण १।५७
अदिस्समाण २।१०९, ३।२३,५८
अदु ९।३।१०
अदुवा १।५७,५८, २।४५, ४।१३; ६।८,४२; ८।५१-५३, ७०,७१,९३; ९।२।८, ९।३।१०
अदिज्जमाण ५।५८
अद्ध (अध्वन्) ९।१।२२
अद्ध (अर्ध) ९।४।५
अधुव ५।२९, ८।५
अन्न (अन्य) १।४४,६३, १५५,१६८, १७७, ४।८, ५।११३, ८।७५, ११६,११७, ११९,९।१।१५, १९, ९।४।८,१०
अन्न (अन्न) ८।११६, ११७,११९
अन्नगिलाय ९।४।६
अन्नतर८।१११,८।८।२५
अन्नमन्न ३।५४
अन्नयर ६।४४,६२, ८।११२
अन्नहा ५।१३४
अन्नेस
-अन्नेसि १।१४८, १७६, ५।५६
अन्नेसि २।१८१, ५।२१
अपज्जवलित ८।५
अपडिण्ण ९।१।२०, ९।२।१५,१६
अपडिण्णत्त ८।७६
अपडिन्न २।११०; ८।३९, ९।२।६,११; ९।३।९,१२, १४,९।४।६, ७,१४,१७
अपडिभाणि ९।१।२१
अपय ५।१३८
अपरिग्गह २।३१
अपरिग्गहमाण ८।३३
अपरिग्गहावंती ५।३९
अपरिजाणय ५।३
अपरिणिव्वाण १।१२२, ४।२६
अपरिणात १।३०,३१, ११४; ५।९
अपरिणाय १।६१,८६, १४१,१६६
अपरिणायकम्म १।८
अपरिन्नाय २।१३९
अपरिमाण ६।३३
अपरिस्सव ४।१२
अपरिहीण २।२५,२६
अपलिउचमाण ८।४७, ६६,८९
अपलोयमाण ६।३६
अपारगम २।७१
अपास ५।६५
अपि १।२७
अपिवित्ता ९।४।६
अपुट्ठ ९।४।१
अपुट्ठा (अपृष्ट्वा) ८।२५
अप्प (आत्मन्) २।१०४, १३५, ३।३२; ८।८।६,१८,९।२।५
अप्प (अल्प) २।४, ६५,८१; ५।३१; ८।१०६,१२६; ८।८।७, ९।१।२०; ९।३।४
अप्पग ८।८।२१
अप्पडिन्न ९।१।२३

-चिट्ठे ८।८।१६,२०
-चिट्ठेज्ज ८।२१,२३
चिट्ठं(दे) ४।१८; ८।८।२०
चित्त २।३,४० ; ६।६
चित्तणिवाति ५।६९
चित्तमंत ५।३१ ; ९।१।१३
चित्तमंतय १।११३
चिररातं ६।६६
चिररात ६।७०
चुअ १।२ ; ५।४८
चेच्चाण ८।१०७,१२७
चेत
-चेएइ ८।२३,२४
-चेएसि ८।२२
-चेतेमि ८।२१
चोर २।४१

छ

छ २।१५०
छउमत्थ ९।४।१५
छंद १।१७३; २।८६ ; ५।२५ ; ६।२६
छज्जीवणिकाय १।१७७, १७८
छट्ठ ९।४।७
छण २।१८०,१८४ ; ३।२१ ; ५।४९
छण
-छणावए ३।४६
-छणे ३।४६; ८।८।९
छणंत ३।४६
छाया ९।४।३
छिद
-अच्छे १।२७,२८,५०, ५१,८१,८२,११०, १११,१३७,१३८, १६१,१६२
-छिंदह ८।२५
-छिंदेज्ज ३।४९
छिज्ज
-छिज्जइ ३।५८
छिन्न १।११३
छिन्नकहकह ८।१०७, १२७
छिन्नपुव्व ९।३।११
छुछुकार
-छुछुकारंति ९।३।४
छेत्त २।१४,१४२; ८।४०
छेत्ता २।१११
छेय ५।१०

ज

ज १।३
जओ ८।८।१८
जंघा १।१२
जंतु ६।१५
जग्ग
-जग्गावती ९।२।५
जण
-जणयंति २।६
जण २।३५,६१,८९ ; ५।७६, ६।९३,९५,९९, ९।२।११, ९।३।४,५
जणग ६।२६,२७
जणवय ३।४३ ; ६।९९
जणवयान्तर ६।९९
जत्त १।६७
जम्म ३।८४
जम्मदंसि ३।८३
जय ३।३८; ४।४१,५२; ५।६९,७५
जयमाण ४।११; ५।४४; ६।३९; ९।१।२१; ९।२।४
जर
-जरेहि ४।३२
जरा ३।१०
जराउय १।११८
जहा १।३४; ४।३३
जहा
-जहाति २।१५६

जुद्ध ५।४६
जुन्न ४।३३
जूर
-जूरति २।१२४
जोग ८।१२६, ९।१।१६
जोणि १।७ ; २।५५ ; ९।१।१४
जोव्वण २।१२

झ

झंझा ३।६९
झा
-झाइ ९।१।५
-झाति ९।१।६,७ ; ९।२।४,१२ ; ९।४।१४,१५
-झायइ ९।४।१४
झाइ ९।४।३
झाण ९।४।१४
झिमिय ६।८
झोस
-झोसेति ३।४१
झोसमाण ५।२०, ६।५०
झोसित ५।९८
झोसिय ५।४१
झोसेमाण ८।२

ठ

ठा
-ठाइज्जा ५।८१
-ठावए ८।८।२१
ठाण २।७२, ५।८१ ; ८।८।१०,१६,१९,२०
ठिय ५।९९, ९।४।११
ठियप्प ६।१०६

ड

डज्झ
-डज्झइ २।६८,८४ ; ३।५८
डस
-डसतु १।३७, ९।३।४
डाह २।८४

ण

ण १।१३७
णंदि २।१६२, ३।३२,४७
णगर ८।१०६,१२६ ; ९।२।३
णगिण ६।४७
णच्चा ३।१३,२८,३३, ४५ , ४।२९ ; ५।३४, ६।८,१९, ८।३५ ; ८।८।१,२५; ९।१।१२,१५,१६
णच्चाणं ९।४।८
णट्ट ९।१।९
णममाण ६।८३,९७
णय २।१७७
णयर ९।४।९
णर ३।१० , ५।६४ ; ६।१,१०९
णरग २।९२
णरय १।२४,४७, ७८,१३४
णस्स
-णस्सति २।६८,८४
णह १।२८
णाइ २।४१; ४।७, ६।९३
णाण ४।५२; ६।२,२९,८२
णाणि ३।४५;४।१३,१९; ९।१।१६
णात १।२,४,२४
णाति २।१०४
णाभि १।२८
णाम ६।२८,९१
णाय (ज्ञात) १।४७,७८, १०७,१३४,१५८
णाय (न्याय) २।१७०
णाय (नाग) ९।३।८
णायपुत्त ८।८।१२ ; ९।१।१०

णायसुय ९।१।१०
णालिया ९।३।५
णास १।२८
णिइय ४।२
णिकरण १।६०; २।१५३
णिक्कमदंसि ३।३४, ४।५०
णिक्खंत १।३५; ६।८५; ९।१।११
णिक्खम्म ५।११९, ६।७९, ९।२।६,१५
णिक्खित्त ४।२७, ६।३
णिक्खिव
-णिक्खिवे ४।५
णिगम ८।१०६,१२६
णिचय ३।३१, ४।१६
णिज्जरापेहि ८।८।५
णिज्जा
-णिज्जाइ ४।५१
णिज्झाइत्ता १।१२१
णिज्झोसइत्ता ३।६०, ६।५९
णिट्ठियट्ठ ६।९८
णिट्ठियट्ठि ५।११६
णिडाल १।२८
णिद्दा ९।२।५
णिद्देस ५।११४
णिद्ध ५।१३०
णिव्वलासय ५।७९
णिमंत
-णिमंतेज्ज ८।२
-णिमंतेज्जा ८।१,२९; ८।८।२४
णियग २।७,१६,२०,७९
णियट्ट
-णियट्टति २।२९; ५।१२२; ६।८४
णियट्टमाण ६।८२
णियम २।५९
णियय २।७६
णियाग १।३४
णियाणओ ६।७
णियाय ५।४४
णिरय १।२४,४७,७५, १०७,१५८; ३।४९, ८।५
णिरामगंध २।१०८
णिरुद्धाउय ४।३४
णिरोव ८।८।१९
णिवज्ज
-णिवज्जेज्जा ८।८।१३
णिवतित ५।५; ९।४।१०
णिवय
-णिवतिसु ९।३।३
णिवाय ९।२।१३
णिवार
-णिवारेइ ९।३।४
णिविज्ज
-णिविज्जति २।१०१
-णिव्विज्जे ५।९४
णिविट्ठ ४।१६
णिव्वाण ६।१०२
णिव्विंद २।१६२; ३।४७
णिव्वुड ४।३८
णिव्वुय ८।१६
णिव्वेय ४।६
णिसन्न ३।४८
णिसम्म ६।७९
णिसामिया ५।४०
णिसिद्ध ३।८६
णिसीय
-णिसीएज्ज ८।२१,२३
-णिसिएज्जा ८।८।१६
णिस्सार ३।४५
णिस्सिय १।८४
णिस्सेयस ८।६१,८४, ११०,१३०
णिह २।७४,१८६
णिहण
-णिहेज्ज ५।४१
-णिहणिमु ९।३।१२

बुइय ५।६३; ९।२।१
बुद्धि १।११३
बुद्ध ४।४७; ६।११; ८।२८, ८।८।२
बू
-आहंसु ९।३।४
-आहु ४।२९, ५।१८
-बूया ४।२६; ५।९७, ८।२१,४१; ९।१।२३, ९।३।१४
-वेमि १।१२,२७,३३, ३४,३८,५०,५३, ६४,६५,८१,८४, ८९,११०,११३, ११७,११८,१२२, १३७,१४०,१४४, १६४,१६९,१७८, २।२६, ४८, ७४, १०३,१२०,१४०, १४७,१५८,१६५, १८६, ३।२५,५०,७०,८७, ४।११,१५,२६, ३९,४५,५३, ५।१२,१८, ३०,३५,३८,४१, ६१,८६,८८,८९, ९२,१०५,११६,
-वेमि १३९, ६।६,२९, ५८,६९,७५,९२, ९८,११२,११३, ८।१,२,१०,२०,२४, २८,२९,४२,६१, ८४,११०,१३०, ८।८।२५, ९।१।२३; ९।२।१६; ९।४।१७
भइणी २।२
भजग ६।७
भगव १।१,९,१९,२४, ४२,४७,७४,७८, १०२,१०७,१३०, १३४,१५३,१५८, २।११३, ६।६५,७३, ८।८,५६,७४,८०, ९६,१००,१०४, ११५,१२४; ९।१।१,४,१५,१८,२३, ९।२।५,६,१५,१६, ९।३।७,१२,१३,१४, ९।४।३,५,९,१२, १६,१७
भगवंत ४।१
भज्जा २।२
भट्ठ ६।८२
भत्त ९।३।३
भमुह १।२८
भय २।४३, ३।७५
भव
-भवइ १।१,४,१३४, १५८, २।६५ ६७,८१, ४।१७, ६।६०, ९६,१०५, ८।८५, ९७,९९,१०३
-भवंति १।७,११,१२, ३०,३१,३३,६१, ६२,६४,८६,८७, ८९,११४,११५, ११७,१४१,१४२, १४४,१६६,१६७, १६९,१७८, ३।४, ५।८६, ६।२,६७, ९५,९९,१११; ८।३
-भवति १।२,२४,४७, ७८,१०७; २।८३; ५।९,१७,३२,४१, ६२,९८; ६।६४, ८५, ८।३,८,४३, ५५,५७,६२,७५, ७९,९५,१०५, १११,११४,११६ से ११९,१२३,१२५
-भविस्सामि १।२,६

-भविस्सामो २।३१
-भवे ५।४४
भाग २।१२५
भाय २।२
भावण्ण २।११०
भास
-भासति ३।५९, ४।१
-भासह ४।२२
-भासामो ४।२३
भासिय ५।४७
भिक्खायरिया ८।७५
भिक्खु २।११०, ५।६२, ६।६०,७०, १०३,१०४, ८।२१ से २५,३९,४१ से ४३,५७,६२,६८, ७६,८५,९१,१०१, १०५,१११,११६ से ११९,१२५, ८।८३, ९।२।१२
भिक्खुणी ८।१०१
भिज्ज
-भिज्जइ ३।५८
भित्ति ९।१।५
भीम ९।२।७,९
भीय ९।१।५
भुज
-भुजति ८।८।९
-भुजह ८।२१
-भुंजित्या ९।१।१८,१९
-भुजे ९।४।६,७
भुजिय ८।२
भुज्जो ५।६५, ६।६१, ८।११२. ९।३।५
भूत ३।२७; ४।१
भूय १।१२२, २।५२, ४।२०,२२,२३,२६; ६।१०३ से १०५, ८।२१ से २४
भेउर २।९६, ५।२९, ८।१०७,१२७. ८।८।२३
भेत्त २।१४,१४२
भेद ६।३३
भेय ६।११३, ८।८।२२
भेरव ६।५६; ८।१०७, १२७
भो १।५४, २।९१, ४।२५
भोग २।७९
भोत्तए ८।७५
भोम ५।८९
भोयण २।२,१८,६६, ८२,१०५
म्म
मइ ५।१२४
मइम १।९१, २।१३२; ३।१२,२५, ९।१।२३
मइमंत ८।८।१
मईम ८।१४, ९।२।१६, ९।३।१४, ९।४।१७
मउ ५।१३०
मता १।९१; ३।१२
मंथु ९।४।४
मद १।१२०, २।३०, ५।५,११, ६।८१; ९।४।१२
मस १।१४०, ४।८३, ६।६७, ८।८।९, ९।३।११
मक्कड ८।१०६,१२६
मग्ग २।४७,११९;४।४२ ५।२२,३०; ६।३
मच्चिय २।१२७, ३।२९ ४।५०
मच्चु ३।१०- ४।१६
मज्ज
-मज्जेज्जा २।११४
मज्झ ४।४६
मज्झगय ५।८९
मज्झत्थ ८।८।५

हस्स २।९; ५।१२६
हालिद्द ५।१२७
हास ३।३२,६१
हिंस
-हिंसिसु १।१४०; ९।१।३; ९।३।३
-हिंसंति १।१४० ; ५।५१
-हिंसिस्संति १।१४०
हिच्चा ४।४०; ६।३०, ७७,९३
हित ८।८।२५
हिमग ९।२।१४
हिमवाय ९।२।१३
हिय ८।६१,८४,११०, १३०
हियय १।२८,१४०
हिरण्ण २।५८
हिरि ८।१११
हिरी ६।४५
हीण २।४९
हु १।१२,१५४
हुरत्था (दे) ५।१२ ; ८।२१,२३
हेउ १।१०,२०,४३,७४, १०३,१३०,१५४
हेमंत ८।५०,६९,९२; ९।१।१,२
हो
-होइ ५।९६
-होउ ५।६६,१०७
-होति ६।५२
होट्ठ १।२८

*

आयार-चूला : शब्द-सूची

अ

अइदूरगय १।१३६

अइपत

-अइपतति २।३०

अइमत्त १५।६८

अईव १५।१२,१३

अक १३।३९ से ७६; १४।३९ से ७६; १५।१४

अककरेलुय १।११३

अकघाई १५।१४

अगारिय १।११६

अंगुलिया १।६२, ३।१६,४७

अजण १।७२,७३

अंजलि ३।६१, ५।५०, ६।५८

अड १।२,४३,५१,८२, ८३,१०२,१३५; २।१,२,३१,३२, ५७ से ६१,६८,६९, ३।५, ५।२८ से ३०, ३५, ६।२९ से ३१,३८;

अंड ७।१०,२६ से ३१,३३,३८,४० से ४५; ८।१,२,२२, २३, ९।१,२, १०।२,१४

अत (अन्त) २।७२; ८।२६, ९।१२; १५।२५

अंत (अन्तस्) १५।२८

अतकड १६।१०,११

अतरा १।४२,४३,५०, ५३,१३९, ३।१,४, ५,७,८,१०,१२ से १४,३४,४१,४३, ४५,४७,४८,५१, ५३ से ६१; ५।४९, ५०, ६।५७,५८

अतरिज्जग ५।१९

अंतरिया १५।३८

अंतरुच्छुय १।१३३; ७।३६ से ३८

अतलिक्ख ४।१७

अतलिक्खजाय १।८७; २।१८,१९; ५।३६ से ३८; ६।३९ से ४१; ७।११ से १३

अंतो १।२९,४१,१३५, १३६; २।१२; ६।४५, ७।२४, ८।१२; १०।१२

अंताहितो ७।२४

अंतोअंत ५।२६,२७, ६।२७,२८

अंव ७।२६ से २८

अंबचोयग ७।२९ से ३१

अंबडगल ७।२९ से ३१

अवपलब १।१०८

अवपाणग १।१०४

अवपेसिय ७।२९ से ३१

अवभित्तग ७।२९ से ३१

अंबवण ७।२५; १०।२७

अवसरडुय १।११०

अवसालग ७।२९ से ३१

अंवा ४।३२

अंबाडगपलव १।१०८
अंबाडगपाणग १।१०४
अंबाडगसरडुय १।११०
अबिल १।१००,१३८; ४।३७
अंसुय ५।१४
अकंत १६।४
अकक्कस ४।११,१३,१५, २२,२४,२६,२८, ३०,३२,३४,३६
अकडुय ४।११,१३,१५, २२,२४,२६,२८, ३०,३२,३४,३६
अकरणिज्ज १।३२; १५।३२
अकसिण १।५
अकालपडिबोहि ३।८,९
अकालपरिभोइ ३।८,९
अकिंचण ७।१
अकिरिय ४।११,१३, १५,२२,२४, २६,२८,३०, ३२,३४,३६
अक्कंत १।३५
अक्कोस
-अक्कोसंति २।२२, ५१; ३।६१;
अक्कोसति ५।५०; ६।५८; ७।१६
-अक्कोसंतु २।२२
-अक्कोसेज्ज ३।९,११
अक्खाइ २।४४
अक्खाइयट्ठाण ११।१४; १२।११
अक्खाय १।२९, ४।८; ७।५७
अगड ३।४८
अगडमह १।२४
अगढिय १।५७
अगणि १।८४,८५,९५; २।४९, ३।५५
अगणिकाय १९।४,९५; २।२१,२३,२९, ४१,४२
अगणिफंडणट्ठाण १०।१९
अगणिय २।४९
अगरहिय १।२३
अगार २।३६,३७,३९ से ४२, १५।१, २६; १६।१
अगारि २।३६,३७, ३९ से ४२
अगिद्ध १।५७
अग्ग १५।२८
अग्गजाय १।११५
अग्गपिंड १।१९,४९,६१
अग्गबीय १।११५
अग्गलपासग १।५०; ३।४१,४७, ४।२१,२२
अग्गला १।५०; ३।४१, ४७; ४।२१,२२,२९
अग्गि १६।५
अग्घा
-अग्घाइ (ति) १५।७४
अग्घाउं १५।७४
अग्घाय १।१०५
अचित्त ८।१७ से २०, १०।२८
अचित्तमंत ४।८; १५।५७,७१
अचेलया १५।१६
अच्चाइण्ण ३।२
अच्चि १५।२८
अच्चुय १५।२५
अच्चुसिण १।९६
अच्छ १।५२; ३।५९
अच्छ
-अच्छाहि ६।२६
अच्छि २।१८; ३।२८
अच्छिंद
-अच्छिंदेज्ज ३।९,११, ६१; ५।५०; ६।५८;

इक्कड २।६३,६५;७।५४
इक्खागकुल १।२३
इच्छ
-इच्छइ १।१३०
-इच्छेज्जा ७।२६,३३, ४०; ८।१६
इट्ठ ११।१९, १२।१६
इड्ढि १५।२७
इतरेतर १।३३,४७; ३।३८ से ४०
इयराइयर २।४१।४२
इति १।२५
इत्थ १।४६
इत्थिय २।२०
इत्थिविग्गह १।३२
इत्थी ४।५,१४,१५; ७।१४; ११।१८; १२।१५; १५।६५, ६६,६७,६९; १६।७
इत्थीवयण ४।३,४
इदाणि १।१३६
इम २।४४
इयर २।४१
इरिया १५।४४
इहलोइय ११।१९
ईसर २।४७; ७।४,६,८, २३,२५,३२,३९, ४६,४९
ईसाण १५।२८,गा० ११
ईसि १५।२८,२९
ईहामिय १५।२८

उ

उउ १।२१
उंछ २।४४; ३।२,३
उंबरमंथु १।१११
उक्कंविय २।१०; ८।१०, ९।१०
उक्कस
-उक्कसाहि ३।१७
-उक्कसिस्सामो ३।१८
-उक्कसेज्जा ३।१४
उक्कसित्तए ३।१८
उक्किट्ठ १५।२७
उक्कुज्जिय १।८९
उक्कुट्ठ १।८०
उक्कुडुय २।६५,६६; ७।५४,५५; १५।३८
उक्ख १।२१,२४
उक्खलुंपिय १।६२
उक्खित्त २।४४; १५।२८, गा १२
उक्खिप्प ३।६
उक्खिप्पमाण १।४९
उगिज्झिय ७।५,७
उग्गकुल १।२३
उग्गय १५।२८
उग्गह १।५४
उच्चार १।५१; २।१८, ३०,७१; १०।१ से २८
उच्चार
-उच्चारिज्जा १५।४६
उच्चारपासवणभूमि २।७०,७१; ८।२४,२५
उच्चारपासवण-
-सत्तिक्कय १०
उच्चावय २।२३ से २५; ३।२६,४४
उच्छु १।११६; ७।३३ से ३५
उच्छुगंडिय १।१३३, ७।३६ से ३८
उच्छुचोयग १।१३३, ७।३६ से ३८
उच्छुडगल १।१३३; ७।३६ से ३८
उच्छुमेरग १।११३
उच्छुमेरुग १।१३३
उच्छुवण ७।३२
उच्छुसालग १।१३३; ७।३६ से ३८
उच्छोल
-उच्छोलेंति २।५४, ७।१९

-उच्छोलेज्ज १।६३, २।१८,२१; ५।३२, ३४, ६।३४,३७, १३।७,१६,२३,३२, ४४,५३,६०,६९, १४।७,१६,२३,३२, ४४,५३,६०,६९
-उच्छोलेहि १।६३, ५।२४, ६।२४
उच्छोलेत्ता १।६३, ५।२४, ६।२४
उजुवालिया १५।३८
उज्जाण ४।२९,३०; १०।२०; ११।८, १२।५; १३।७७, १४।७७, १५।२९
उज्जाल
-उज्जालेतु २।२३
-उज्जालेज्ज २।२१,२३, २९
उज्जालिया २।४०,४१
उज्जालेत्ता २।२१
उज्जुय १।५०,५२,५३, ६१, २।४४; ३।६, ७,४१,४३
उज्जोय १५।९,४०
उज्झर ११।५; १२।२
उज्झिय १।१३३,१३४, १४७,१५४
उज्झियवम्मिय ५।२०, ६।१९
उट्ट ५।१५
उड्डवद्धिय २।३४,३५
उड्डुय २।७५; ८।२९
उड्ढ १५।२७,३८
उड्ढगामिणी ३।१४
उण्णमिय १।६२, ३।१६, ४७
उत्तम १५।२८, गा० १०
उत्तर
-उत्तरेज्जा ३।४२
उत्तर १५।२७,२८ गा०१३, १५।३८
उत्तरखत्तियकुंडपुर १५।५,२७,२९
उत्तरगुण १५।२५
उत्तरपुरत्थिम १५।२७, ३८
उत्तरिज्जग ५।१९
उत्तस
-उत्तसेज्ज ३।४९
उत्ताण १।१३१, ७।९
उत्तिंग १।२,४२,४३,५१, ८२,८३,१०२,१३५;
उत्तिंग २।१,२,३१, ३२,५७से ६१,६८, ६९; ३।१,४,५,२१, २२, ५।२८,२९,३०, ३५; ६।२९ से ३१, ३८; ७।१०,२६ से ३१,३३ से ३८, ४० से ४५; ८।१, २,२२,२३; ९।१,२; १०।२,३,१४,२८
उदउल्ल १।६४,६५, १०२, ३।३०,३१, ३७,३८, ६।४८
उदग ३।२५ से ३०,३७, ५५; ६।४७
उदगदोणि ४।२९
उदगपमूय ३।५५
उदगप्पसूय २।१४; ८।१४; ९।१४
उदय(उदक) १।२,४२, ४३,५१,८२,८३, १०२,१३५; २।१, २,३१,३२,४९,५७ से ६१,६८,६९; ३।१, ४,५,७,१३,१४,२०, २२,३४ से ३६,४५, ५५,५९,६०;

चम्म २।४६
चम्मकोस २।४६
चम्मकोसग(य) ३।२४, ७।३,२४
चम्मग ३।२४
चम्मछेदण २।४६
चम्मछेदणग ३।२४; ७।३,२४
चम्मपाय ६।१३
चम्मबंधग ६।१४
चम्मय ७।३,२४
चय
-चइस्सामि १५।४
-चए १६।१
-चएज्ज १६।७
चयण १५।३९
चयमाण १५।४
चयोवचइय ४।८
चर
-चरे १६।९
चरंत १६।२
चरित्त १५।३२,३३ गा०१८; १९।३३
चरिम १५।२५
चरिया (चर्या) २।४४
चरिया (चारिका) १०।२१, ११।९, १२।६
चलाचल २।४६; ५।३६ से ३८; ६।३९ से ४१; ७।११ से १३
चवल १५।२७
चाउमासिय १।२१
चाउल १।६,७,८२, ११९,१४४
चाउलपिट्ठ १।११९
चाउलोदग १।९९
चामर १५।२८ गा० ११
चार ३।४९
चारिय ४।१२,१४
चारु १५।२८
चालिय १।६२
चिचापाणग १।१०४
चिच १५।२७
चिच्चा १५।२६
चिट्ठ
-चिट्ठेज्जा १।४४,५५, ५६,५८,६२,१२३; ३।३० से ३७; ८।२७,२८
चिट्ठमाण १।५७, ८।२८
चित्त १५।२८
चित्तकम्म १२।१
चित्तमंत १।५१,८२,८३, १०२; ५।३५; ६।३८; ७।१०; १०।१४; १५।५७,७१
चित्तमंत ६।३८; ७।१०; १०।१४; १५।५७,७१
चित्तचिल्लड ३।५९
चित्तचिल्लडय १।५२
चिय ४।२६
चिराधोय १।१००
चिलिमिली २।४६; ३।२४, ७।३,२४
चीणसुय ५।१४
चीवर ३।२५; ५।४२ से ४५
चीवरधारि ३।२५
चुंब
-चुंबेज्ज ९।१६
चुण्ण(न्न) २।२१,५३, ५।२३,३१,३३; ६।२३,३३,३६, ७।१८; १३।६,१५, २२,३१,४३,५२ ५९, ६८, १४।६,१५,२२, ३१,४३,५२,५९,६८
चुण्णवास १५।१०
चुय
-चुएमि १५।४
चुय १५।१,३,२५
चेइय ३।४७, १५।३८
चेइयकड ३।४७; ४।२१, २२

पग्गह १५।३६
पग्गहित(य)राग २।७६; ८।३०
पग्गहिय १।१४६,१५३
पघंस
-पघसंति २।५३; ७।१८
-पघंसाहि ५।२३; ६।२३
-पघंसेज्ज २।२१; ५।३१,३३; ६।३३,३६
पघसित्ता ५।२३; ६।२३, २४
पच्चंत ११।१७, १२।१४
पच्चंतिक(य) ३।८,९
पच्चक्ख
-पच्चक्खाइंति १५।२५
-पच्चक्खाएज्जा ३।१५,३४
-पच्चक्खामि ७।१; १५।४३,५०,५७, ६४,७१
पच्चक्खयण ४।३,४
पच्चक्खाइत्ता १५।२५
पच्चक्खाएत्ता ३।१५,३४
पच्चपिण
-पच्चप्पिणेज्जा २।६८, ६९; ७।९; ८।२२, २३
पच्चपिणित्तए २।६८, ६९, ८।२२,२३
पच्चाइक्ख
-पच्चाइक्खिस्सामि १।१२३
पच्चावाय १।३२
पच्चोत्तर
-पच्चोतरति १५।२८
पच्चोतरित्ता १५।२८
पच्चोयर
-पच्चोयरइ १५।२९
पच्चोयरित्ता १५।२९
पच्छा १।२९,३२,४२, ४३,४६,१२१; २।२८,२९,३८,४५, ४६,४८, ५।३,२२; ६।२१, १०।१, १५।२८ गा० १२, १५।४१
पच्छाकम्म १।९१,१४४, १५१, २।२७
पच्छासंथुय १।४६,१२२, १३०
पजूहिय १।४५
पज्ज
-पज्जेहि ३।२४
पज्जत्त १५।३३
पज्जभाएत्ता १५।१३,२६
पज्जभाय
-पज्जभाएंति १५।१३
पज्जवजाय १।१४४,१५१
पज्जाय १५।३९
पज्जाल
-पज्जालेतु २।२३
-पज्जालेज्ज २।२१, २३,२९
पज्जालेत्ता २।२१
पट्ट १५।२८
पट्टण १।२८,३४,१२२; २।१; ३।२,३,४५, ५७,५८; ७।२, ८।१, ११।७, १२।४, १५।२८
पड
-पडउ ४।१६
पडह १५।२८ गा० १६
पडाया १५।२८
पडिकूल २।२७
पडिक्कम
-पडिक्कमामि १५।४३, ५०,५७,६४,७१

पडिक्कमित्ता १५।२५
पडिगाह
-पडिगाहेज्जा १।४ से ७,१२ स १८,२१ मे २५,३६,४१,६३ से ८२,८५,८७ मे १०२,१०४,१०६ से ११९,१२१,१२३, १२८,१३३ से १३६, १४१ से १४९,१५१ से १५४, २।४८, ५७ से ६१,६३,७४, ५।५ से १५,१७ से २०,२२ से २५,२८ से ३०, ६।४ से १४, १६ से १९,२१ मे २६,२९ से ३१,४६, ७।२६ से ३१,३३से ३८,४० से ४५,८।१
पडिगाहित्तए १।१३५, ५।२५; ६।२५
पडिगाहिय १।३५,१३५
पडिगाहेत्ता १।३३,४७, ५७,१२५ से १२८, १३० से १३२
पडिग्गह १।४६,१०१, १३१,१३७, ३।९, ११,२१, पडिग्गह ६।२७,२८,४७ से ५०,५३ से ५८
पडिग्गहग'य) १।१३५, १३६,१४३, ६।२६, २७,४४ से ४६,४९, ५६,५७
पडिग्गहधारि १।१४३
पडिग्गहिय १।१४४, १५१, ६।४७
पडिग्गाह
-पडिग्गाहेज्जा १।१
पडिग्गाहिय २।२,१३३, १३६
पडिच्छ
-पडिच्छइ १५।२९,३१
पडिच्छित्ता १५।३१
पडिणीय ७।२४
पडिपह १।५२, ३।५४ से ५९, ५।४८, ६।५६
पडिपुण्ण ४।२६, १५।१, ८,३८,४०
पडिबद्ध २।५०, ७।१५
पडिबोह
-पडिबोहेज्जा ७।२४
पडिमा १।१५५, २।६२ से ६७, ५।१६ से २१, ६।१५ से २०, ७।४८ से ५६, ८।१६ से २१
पडिय १५।२९,३१
पडिया १।१,४ से ८,११ से १७,१९,२१,२३, २४,२६,२८,२९, ३२,३४ से ३७, ४०,४२ से ४६, ४९,५०,५२,५३, ५५,५८,६१,६२, ८२ से ८५,८७,८९ से ९९,१०१,१०२, १०४ से ११९; २।३ से ७,१०,१२,१४, १६,२१,२७ से २९; ३।१४,६०,६१, ५।४ से ८,१२,४२से४५, ४९,५०, ६।४ से ७, ११,४४,४६,५०, ५३,५७,५८, ७।५, ७; ८।३ से ५,१०, १२,१४, ९।३ ४, ५,१०,१२,१४, १०।४ मे ९,११, ११।१ से १८, १२।१ से १६
पडिलव ४।२०,२२,३०
पडिलेह
-पडिलेहिज्जा ५।२७, ६।२८; ८।२४

संथर
-संथरेज्जा १।२९, २।१२,७२; ८।१२, २६; ९।१२
सथरमाण ३।८ से १३
संथरेत्ता २।७३; ८।२७
संयार २।४१,४२,४४; १५।२५
संथारग(य) १।२९; २।१२,५७ से ६४, ३।२,३; ७।७, ८।१२,२२,२३,२६ से २८; ९।१२
संथारग(भूमि) २।७३; ८।२६
संधि १।६२
संनिरुद्ध २।४५
संपधूमिय २।१०, ५।१२; ६।९; ८।१०; ९।१०; १०।११
संपदा १५।२६ गा० १
संपण्ण १५।७८
संपराइय २।२५
संपरिहाव
-संपरिहावइ १।३३
संपवेव
-संपवेवए १६।३
सपव्वइय ७।३
संपाइ(ति)म १।४०; ३।१५; ५।४५, ६।५३
सपिडिय ३।६०,६१, ५।४९,५०; ६।५७, ५८
संफास
-सफासे १।३३,४६, ४९,५७,१२३,१२५ से १२७,१३० से १३२,१३८; ३।४०; ५।४७, ६।५५
संवधि १५।१३,३४
संभोइय १।१२७,१३६, ७।५,७
सभोएत्ता १।१०२
संभज्जिय १।४६
संमट्ठ २।१०, ५।१२, ६।९; ८।१०; ९।१०. १०।११
संमिस्स १।११६
समुच्छिय ४।१७
संमेल १।४२,४३
संरंभ २।४१,४२
सरक्खण १५।२५
संलिह
-संलिहेज्ज १।५१; ३।३१,३२,३९; ६।४८,४९
सलिहिय १।४६
संलेहणा १५।२५
संलोय १।५५,५६,६२
संवच्छर १५।२६,२६ गा० १,३
सवड्ढ
-संवड्ढइ १५।१४
सवर १५।३६
सवस
-सवसति २।३४,३५
-संवसे १६।४
-संवसेज्जा २।४८,६५, ६६, ७।५४,५५
सवसमाण २।२१ से २५ २८,२९
सवहण ४।२८
सवाह
-संवाहेज्ज १३।३,१३, २०,२९,४०,५०. ५७,६६; १४।३, १३,२०,२९,४०, ५०,५७,६६

सयं १।२५,१०१,१३१, १४१,१४७,१५१ से १५४; २।६३,६४, ३।१८,२६,६१, ५।१७ से २०,५०, ६।१६ से १९,५८; ७।२,५,७,९, १५।४३,५०,५७, ६४,७१
सयण(शयन) ४।२९ १५।६९
सयण(स्वजन) १५।१३, ३४
सयपाग १५।२८
सयमाण २।७४
सयसहस्स १५।२६ गा० २,३; १५।२८ गा० ९,१६
सया १।२०,३०,४१,४८, ६०,८६,१०३, १२०,१२९,१३७, १५६; २।२६,४३, ७७; ३।२३,४६, ६२; ४।१८,३९; ५।४०,५१, ६।४३, ५९; ७।२२,५८, ८।३१; ९।१७;
सया १०।२९; ११।२०; १२।१७, १३।८०, १४।८०
सर(सरस्) ३।४८; ११।५, १२।२
सर(शर) १६।२
सरक्ख १।५१
सरग १।१४३
सरड्डयजाय १।११०
सरण ३।४९,५९,६०, ५।४८,४९, ६।५६,५७
सरपंतिय ३।४८; ११।८; १२।२
सरभ १५।२८
सरमह १।२४
सरमाण १५।६७
सरय १५।२८ गा०१४
सरसरपंतिय ३।४८; ११।५; १२।२
सराव १।१४५,१५२
सरित्तए १५।६७
सरीर २।१८; १५।२५
सरीसिव ३।४९,५४, ४।२५,२६
सलिल १६।१०
सल्लइपलंब १।१०८
सल्लइपवास १।१०९
सवियार ८।१७ से २०
सव्व १।२०
सव्वओ १५।१
सव्वण्णु १५।३९
सव्वत्त १५।१
सव्वसह १६।४
ससंधिय ५।४६,४७; ६।५४,५५
ससरक्ख १।५१,६६,६७, १०२; २।७६; ५।३५; ६।३८; ७।१०; ८।३०; १०।१४
ससणिद्ध ५।३५, ७।१०
ससिणिद्ध १।५१,६५, ६६,१०२; ३।३०, ३१,३७,३८; ६।३८, ४७,४८; १०।१४
ससीसोवरिय २।७३; ३।१५,३४; ८।२७
सस्स ४।१६
सह
-सहइ १५।१६,३७
-सहिस्सामि १५।३४
सहसम्मुइय १५।१६
सहसा ३।२६